हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 19 जुलाई 2026

9 शिक्षकों को रोबोटिक्स, 3-डी प्रिंटर और आधुनिक...

10 नारनौल रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं की मांग तेज

AIT KANINA PHARMACY COLLEGE
Approved by : AICTE & PCI, New Delhi
पॉलिटेक्निक करें नौकरी पाएं
B.PHARM (4 YEARS) D.PHARM (2 YEARS) 2 YEARS COURSE
ADMISSION OPEN
For Session 2026-27
Eligibility : 10+2 Pass (Medical & Non-Medical) सीटें सीमित
पता : AIT Pharmacy College गाहड़ा रोड, कनीना Mob. : 9992696300, 9466464921

MR DEGREE COLLEGE
।। तमसो मा ज्योतिर्गमय ।।
Affiliated to Indira Gandhi University, Meerpur (Rewari)
GET UPTO 100% SCHOLARSHIP
COURSE AVAILABLE
B.SC. (Medical) | B.SC. (Non-Medical)
B.A. | B.COM | M.SC. (Phy. & Chem.)
B.Ed. | JBT D-PHARMA
ADMISSION OPEN
Session 2026-27
For Admission Visit College Campus
Bus Facility Available From All Routes
MITTERPURA (M/GARH) HRY.
9466886066, 9416903367, 9416903021
mrcollegemitterpura@gmail.com

राजकीय महाविद्यालय में यूजी-पीजी के वरिष्ठ वर्गों की प्रवेश प्रक्रिया जारी

उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के प्रवेश पोर्टल पर ऑनलाइन जमा करें फीस

महाविद्यालय प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि प्रवेश संबंधी सभी औपचारिकताएं 24 जुलाई तक पूरी करना अनिवार्य है। निर्धारित तिथि के बाद प्रवेश प्रक्रिया पर विलंब शुल्क लागू हो सकता है।

नारनौल। पीजी कॉलेज।

फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

मिशन एडमिशन

राजकीय महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए स्नातक (यूजी) द्वितीय एवं तृतीय वर्ष तथा स्नातकोत्तर (पीजी) द्वितीय वर्ष की प्रवेश प्रक्रिया जारी है। महाविद्यालय प्रशासन ने विद्यार्थियों से 24 जुलाई तक सभी प्रवेश संबंधी औपचारिकताएं पूर्ण करने का आग्रह किया है। महाविद्यालय के प्राचार्य कृष्ण कुमार के निर्देशन में प्रवेश प्रक्रिया संचालित की जा रही है। ऑनलाइन प्रवेश के नोडल अधिकारी प्रो. सतीश सैनी ने बताया कि सभी पात्र विद्यार्थी सबसे पहले उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के प्रवेश पोर्टल पर ऑनलाइन फीस जमा करें। इसके बाद निर्धारित प्रवेश आवेदन पत्र सावधानीपूर्वक भरकर आवश्यक प्रक्रिया पूरी करें।

उन्होंने बताया कि ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी होने के बाद विद्यार्थियों को अपने सभी मूल दस्तावेज तथा उनकी स्वप्रमाणित प्रतियों के साथ संबंधित कक्षा की प्रवेश समिति के समक्ष उपस्थित होकर प्रवेश का सत्यापन एवं अन्य आवश्यक औपचारिकताएं समय पर पूरी करनी होंगी। महाविद्यालय प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि प्रवेश संबंधी सभी औपचारिकताएं 24 जुलाई तक पूरी करना अनिवार्य है। निर्धारित तिथि के बाद प्रवेश प्रक्रिया पर विलंब शुल्क (लेट फीस) लागू हो सकता है। प्रशासन ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से अंतिम तिथि का इंतजार न करने की अपील करते हुए कहा कि किसी भी तकनीकी या प्रशासनिक परेशानी से बचने के लिए समय रहते प्रवेश प्रक्रिया पूरी कर लें। प्रवेश संबंधी किसी भी जानकारी या सहायता के लिए विद्यार्थी संबंधित विभाग की प्रवेश समिति अथवा महाविद्यालय की ऑनलाइन प्रवेश समिति से कार्यालय समय में संपर्क कर सकते हैं।

अंतिम तिथि का न करें इंतजार

यूजी द्वितीय एवं तृतीय वर्ष तथा पीजी द्वितीय वर्ष के सभी पात्र विद्यार्थी 24 जुलाई से पहले अपनी ऑनलाइन फीस जमा कर प्रवेश आवेदन की प्रक्रिया पूरी करें। इसके बाद मूल दस्तावेजों एवं स्वप्रमाणित प्रतियों के साथ संबंधित प्रवेश समिति से सत्यापन अवश्य कराएं। अंतिम तिथि का इंतजार न करें, ताकि किसी भी तकनीकी या प्रशासनिक असुविधा से बचा जा सके।

-डॉ. सतीश सैनी, दाखिला नोडल अधिकारी पीजी कॉलेज नारनौल

इंस्पायर अवॉर्ड मानक विद्यार्थियों के ऑनलाइन नामांकन के निर्देश

नारनौल। शिक्षा विभाग ने इंस्पायर अवॉर्ड मानक योजना 2026-27 के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर जिले के सभी बीईओ को दिशा-निर्देश जारी किए हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से जारी आदेशों के अनुसार जिले के सभी सरकारी एवं निजी वरिष्ठ माध्यमिक, उच्च तथा माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा छठरं से 12वीं तक के विद्यार्थियों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करते हुए ऑनलाइन नामांकन और नवाचार आधारित आइडिया अपलोड करने की प्रक्रिया निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाएगी। जारी पत्र के अनुसार इंस्पायर अवॉर्ड मानक योजना का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता तथा नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करना है। योजना के अंतर्गत विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन में आने वाली किसी स्थानीय समस्या का व्यावहारिक एवं मौलिक समाधान प्रस्तुत करते हुए नया वैज्ञानिक विचार विकसित करेंगे। चयनित विचारों को ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड कर आगे की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाएगा।

25 जुलाई तक होगी प्रतियोगिता

निर्देशों के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में 25 जुलाई के बीच विशेष आइडिया प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इस दौरान विद्यार्थियों को विज्ञान एवं तकनीकी नवाचार से जुड़े विचार विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। विद्यालय स्तर पर प्राप्त प्रविष्टियों का मूल्यांकन कर सर्वश्रेष्ठ विचारों का चयन किया जाएगा। चयन प्रक्रिया में नवाचार, सामाजिक उपयोगिता, संभावित प्रभाव और मौलिकता जैसे मानकों को प्राथमिकता दी जाएगी। विद्यार्थियों को अपने विचार का संक्षिप्त विवरण लिखने के साथ आवश्यकता होने पर उसका मॉडल, चित्र अथवा डिजाइन भी प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। विद्यालयों को निर्देश दिए गए हैं कि प्रतियोगिता के प्रचार-प्रसार के लिए प्रार्थना सभा, सूचना पट्ट, नोटिस बोर्ड तथा अन्य माध्यमों का उपयोग करें ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी योजना से जुड़ सकें।

अधिकतम 5 विद्यार्थियों के विचार नामांकन के लिए भेजें

पत्र में स्पष्ट किया है कि प्रत्येक विद्यालय अपने सर्वश्रेष्ठ अधिकतम पांच विद्यार्थियों के विचार नामांकन के लिए भेज सकेगा। इनमें अधिकतम दो प्रविष्टियां कक्षा 11वीं एवं 12वीं से तथा शेष कक्षा छठीं से 10वीं तक के विद्यार्थियों से ली जा सकेंगी। चयनित विद्यार्थियों के नामांकन और आइडिया अपलोड की समस्त प्रक्रिया इंस्पायर अवॉर्ड के आधिकारिक पोर्टल पर विद्यालय की यूजर आईडी और पासवर्ड के माध्यम से पूरी की जाएगी। आदेशों में विद्यालयों को निर्देशित किया गया है कि जिन विद्यालयों ने अभी तक पोर्टल पर पंजीकरण नहीं कराया है, वे तत्काल अपनी यूजर आईडी एवं पासवर्ड प्राप्त कर पंजीकरण की प्रक्रिया पूर्ण करें। सभी विद्यालयों को नामांकन का रिकॉर्ड सुरक्षित रखने तथा ऑनलाइन आवेदन के बाद प्राप्त रसीद भी अपने अभिलेखों में सुरक्षित रखने के निर्देश दिए गए हैं।

क्या कहते हैं डीईओ

जिला शिक्षा अधिकारी विश्वेश्वर कौशिक ने बताया कि सभी खंड शिक्षा अधिकारियों से पत्र भेजा जा चुका है। वे अपने-अपने क्षेत्र के विद्यालयों की नियमित निगरानी करें तथा यह सुनिश्चित करें कि 31 जुलाई तक सभी पात्र विद्यार्थियों का ऑनलाइन नामांकन एवं आइडिया अपलोड निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार पूर्ण हो जाए, ताकि जिले के अधिकाधिक विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतिष्ठित नवाचार योजना का लाभ प्राप्त कर सकें।

विज्ञापन साइट एजेंसी ने कनीना नगर पालिका को लगाया 72 लाख का चूना

- विज्ञापन एजेंसियों की मनमानी, अधिकारी सिर्फ नोटिस देकर झाड़ रहे पल्ला
- पिछले दो साल से नहीं किए रिकवरी के प्रयास

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

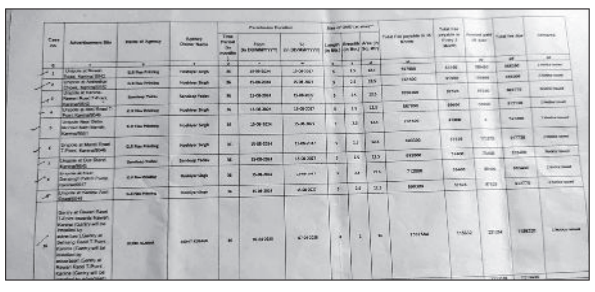

कनीना। नपा की ओर से छोड़ी गई विज्ञापन साइट व फंसी हुई रकम का ब्योरा।

नगर पालिका में विज्ञापनों, यूनिपोल और गैन्ट्री के ठेके से होने वाली आय में घोर लापरवाही तथा राजस्व का भारी नुकसान सामने आया है। शहर के विभिन्न प्रमुख चौराहों और मार्गों पर लगी विज्ञापन साइट्स का पैसा पिछले करीब दो साल से पालिका के खाते में जमा नहीं हुआ है। अनुबंध की शर्तों के अनुसार, संबंधित विज्ञापन एजेंसियों को हर तीन-तीन महीने में यह निर्धारित राशि नगर पालिका कार्यालय में जमा करवानी थी, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि नपा की ओर से 10 साइट्स को तीन साल के लिए छोड़े गए ठेके के बाद से अब तक कुल तीन फर्मों की ओर से 1113189 रुपये ही अदा किए गए हैं, जबकि 7219695 रुपये की बकाया राशि का एजेंसियों की ओर से भुगतान नहीं किया है, जिससे नगर पालिका को वित्तीय घाटा उठाना पड़ रहा है।

प्राप्त दस्तावेजों और संलग्न की गई सूची में दर्ज आंकड़ों पर गौर करें तो स्थिति और भी चिंताजनक नजर आती है। कनीना में रेवाड़ी रोड, अंबेडकर चौक, बाबा मोलडनाथ नाथ मंदिर के पास, बस स्टैंड व अटेली रोड टी-पॉइंट सहित 10 प्रमुख साइटों का ठेका तीन एजेंसियों जीआर फ्लैक्स प्रिंटिंग के ऑनर होशियार सिंह के अलावा संदीप यादव व रोहित कुमार के नाम आबंटित किया गया था।

इन साइटों से कुल 36 महीने की अवधि में 83,32,884 रुपये का राजस्व पालिका को प्राप्त होना था, लेकिन तीनों एजेंसियों ने अब तक मात्र 11,13,189 रुपये ही जमा करवाए हैं। नतीजा यह है कि बकाया के रूप में 72,19,695 रुपये का भारी-भरकम अमाउंट फंसा हुआ है। इस पूरे प्रकरण में सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात नगर पालिका के संबंधित अधिकारियों का ढुलमुल रवैया है।

72 लाख रुपये से अधिक रकम दांव पर होने के बावजूद विभागीय अधिकारियों ने केवल कागजी नोटिस जारी करके अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली। दस्तावेजों के रिमार्क कॉलम में भी केवल 'नोटिस इश्यूड' लिखकर पल्ला झाड़ लिया। इसके बाद रिकवरी के लिए कोई सख्त कदम नहीं उठाया गया। नपा के जिम्मेवार अधिकारियों की यह उदासीनता व एजेंसियों की मनमानी से मिलीभगत की आशंकाएं भी जन्म ले रही हैं।

सरकारी खजाने को लग रहे इस 72 लाख रुपये के झटके ने पूरी व्यवस्था पर सवालिया निशान लगा दिए हैं। अब देखना यह है कि क्या उच्चाधिकारी इस मामले का संज्ञान लेकर सख्त कार्रवाई करेंगे या ये दस्तावेज फाइलों में ही दबे रह जाएंगे।

क्या कहती हैं नपा चेयरपर्सन

इस बारे में नपा चेयरपर्सन डॉ. रिम्पी लोढ़ा ने बताया कि विज्ञापन साइट का वर्ष 2024 से 2027 तक तीन वर्ष के लिए टेंडर छोड़ा गया था। इस संदर्भ में पोर्टल के देखरेख तथा पेमेंट सम्बंधी जिम्मेवारी एमई की है। पैसे नहीं अदा करने पर उनसे जानकारी लेकर टेंडर एजेंसियों को ब्लैक लिस्ट करने की प्रक्रिया अमल में लाई जाएगी और केस दायर कर बकाया रकम की वसूली के प्रयास किए जाएंगे। कुछ साइट अनअप्रूव्ड भी चल रही है, जिन्हें जल्द ही हटाया जाएगा।

एमई व सचिव को किया तलबः डीएमसी

डीएमसी रणवीर सिंह ने बताया कि विज्ञापन साइट्स संबंधी टेंडर की पेमेंट फंसने का मामला उनके संज्ञान में आया है। एमई व सचिव की ओर से कम राशि बताई गई है। उन्हें रिकार्ड के साथ तलब किया गया है। रिकार्ड के अवलोकन में खामी मिलती है, तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

कार्यालय का वर्कलोड अधिकः सचिव

इस बारे में नपा के सचिव कपिल कुमार ने बताया कि उनके पास कार्यालय का वर्कलोड अधिक है। एमई दिनेश कुमार से जानकारी विज्ञापन साइट्स के रिकॉर्ड का अवलोकन करने के बाद ही वास्तविकता बताई जा सकती है। टेंडर लगाने के बावजूद ये पैसा अदा नहीं किया जाता है, तो इसकी जानकारी एमई की ओर से उन्हें दी जानी चाहिए, इसके बाद विज्ञापन एजेंसियों जीआर फ्लैक्स प्रिंटिंग, संदीप यादव व रोहित कुमार के खिलाफ उचित कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

श्रीराम-हनुमान के चित्र हटाकर बनाए डस्टबिन

देवताओं की तस्वीर बनाने पर उठे सवाल, डाल रहे कूड़ा

नारनौल। आपत्ति के बाद बदली दीवार पेंटिंग व 18 जुलाई को प्रकाशित समाचार।

- गोरक्षा दल की आपत्ति के बाद नप ने बदली दीवार पेंटिंग

नारनौल। शहर में स्वच्छता अभियान के तहत बनाई गई एक दीवार पेंटिंग को लेकर उठे विवाद के बाद नगर परिषद ने उसमें बदलाव कर दिया है। गोरक्षा दल अध्यक्ष भवानी शंकर की ओर से आपत्ति दर्ज कराए जाने के बाद दीवार पर बने भगवान श्रीराम व हनुमान के चित्र हटा दिए गए हैं। उनकी जगह अब सूखा और गीला कचरा दर्शाने वाले डस्टबिन के चित्र बनाए गए हैं। गोरक्षा दल का कहना था कि सड़क किनारे बनी दीवार पर भगवान श्रीराम और हनुमान जी के चित्रों के सामने कूड़ा-करकट जमा होने से धार्मिक भावनाएं आहत हो सकती हैं। नगर परिषद ने मामले का संज्ञान लेते हुए पेंटिंग में संशोधन कराया। गोरक्षा दल अध्यक्ष भवानी शंकर ने नगर परिषद के इस निर्णय का स्वागत करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया। गोरक्षा दल ने आमजन से कहा है कि धार्मिक प्रतीकों और देवी-देवताओं के चित्रों का उपयोग केवल ऐसे स्थानों पर करें, जहां उनकी गरिमा और सम्मान बना रहे तथा किसी भी प्रकार से उनका अपमान होने की संभावना न हो।

मिलेगा लाभ इस परियोजना से ग्रामीण यात्रियों को मिलेगी सुविधा

महेंद्रगढ़ के 14 गांवों में बनेंगे बस क्यू शेल्टर, खर्च होंगे 37.10 लाख रुपये

विभाग ने तीन माह में काम पूरा करने का रखा लक्ष्य

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। क्षेत्र के 14 गांवों में नए बस क्यू शेल्टर बनाए जाएंगे। इस परियोजना पर कुल 37 लाख 10 हजार रुपये की लागत आएगी।

बस क्यू शेल्टर बनने से ग्रामीणों, विद्यार्थियों, महिलाओं, बुजुर्गों और दैनिक यात्रियों को बसों की प्रतीक्षा के दौरान सुरक्षित और सुविधाजनक स्थान उपलब्ध होगा। विभाग ने निर्माण कार्य को लगभग तीन माह के भीतर पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

हजारों लोगों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा

जानकारों का कहना है कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार की सुविधाओं का विस्तार सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने में भी सहायक होता है। जब बस स्टैंड पर सुरक्षित और सुविधाजनक प्रतीक्षालय उपलब्ध होते हैं तो लोग निजी वाहनों की बजाय सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करते हैं। इससे यातायात व्यवस्था में सुधार के साथ-साथ आम लोगों की यात्रा भी अधिक सहज हो जाती है।

यह कहते हैं विधायक

विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं के विस्तार के लिए लगातार कार्य कर रही है। सड़क, पेयजल, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन जैसी मूलभूत सुविधाओं को मजबूत करना सरकार की प्राथमिकता है। बस क्यू शेल्टरों का निर्माण कार्य लगभग तीन माह में पूरा कर लिया जाएगा, ताकि ग्रामीणों को जल्द से जल्द इसका लाभ मिल सके।

इन गांवों में बनेंगे शेल्टर

इस योजना के तहत बास खुडाना, भुरजट, भांडोर नीची, गुलावला, भालखी, पथरवा, निम्बहेड़ा, बलायचा, खातोद, आदलपुर, पालड़ी, भगड़ाना, जोनावास और नांगल सिरोही गांवों के बस स्टैंड पर आधुनिक बस क्यू शेल्टर बनाए जाएंगे। लंबे समय से इन गांवों के लोग बस स्टैंड पर पर्याप्त छाया और बैठने की सुविधा की मांग कर रहे थे। गर्मी, बरसात और सर्दी के मौसम में यात्रियों को खुले में खड़े होकर बसों का इंतजार करना पड़ता था, जिससे उन्हें काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। नई परियोजना के तहत बनने वाले बस क्यू शेल्टर यात्रियों को मौसम की मार से राहत देंगे। इनमें बैठने की व्यवस्था के साथ मजबूत छत और आवश्यक संरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इससे स्कूल-कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों, किसानों और अन्य यात्रियों को विशेष लाभ मिलेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है, ऐसे में यह सुविधा स्थानीय लोगों के लिए काफी उपयोगी साबित होगी।

नोलायजा के समीप झाड़ियों में महिला का शव बरामद

नांगल चौधरी। नोलायजा के नजदीक झाड़ियों में एक अज्ञात महिला का शव मिलने पर गांव में सनसनी का माहौल उत्पन्न हो गया। लोगों की सूचना पर घटना स्थल पर पहुंची पुलिस ने शव का निरीक्षण किया, लोवर की पॉकेट तलाशी, लेकिन शिनाख्त नहीं हो पाई है। थाना इंचार्ज ने सरपंचों व सामाजिक संगठनों की मदद से मृतक महिला की पहचान कराने की प्रक्रिया आरंभ कर दी है। नोलायजा नदी की झाड़ियों के नजदीक से पगडंडी है, जिससे लोगों को खेत व पड़ोसी गांव शहबाजपुर जाने की सुविधा है। शनिवार की सुबह झाड़ियों में सड़न होने पर चरवाहों ने तलाशी की, तो उन्हें मृत महिला दिखाई दी। उन्होंने तुरंत डायल 112 पर सूचना देकर मामले को ट्रेस करने की गुहार लगाई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव का मुवायना किया, जिसमें मृत महिला लोवर व टी शर्ट पहने हुए हैं। थाना इंचार्ज पवन कुमार ने बताया कि बरामद शव को कब्जे में लेकर छानबीन की, जिसमें बाहरी चोट नहीं मिली। करीब 35 वर्षीय अज्ञात युवती लोवर-टीशर्ट पहने हुए है, जिसके शव को नारनौल नागरिक अस्पताल में पहुंचा दिया है। मौत के कारणों का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट में संभव हो पाएगा। उन्होंने बताया कि मामला दर्ज करके वारदात को ट्रेस करने की प्रक्रिया आरंभ कर दी है।

SOMANY EDUCATIONAL INSTITUTIONS
A LEGACY OF 25+ YEARS OF EXCELLENCE IN EDUCATION
* Somany Institute of Technology and Management * Somany College of Pharmacy
ADMISSIONS OPEN
COURSES OFFERED
SITM Courses
• B.Tech (CSE, ME, ECE, PT)
• M.Tech (CSE, ME, ECE, PT)
• BBA • BCA • MBA
SCP Courses
• D.Pharma
• B.Pharma
Upto 100% Scholarship
Facilities
• Experienced Faculty
• Modern Infrastructure
• Well Equipped Labs
• Placement Assistance
• Holistic Development
Delhi - Jaipur Highway, NH - 48, Near Rewari City Sector 26
www.somanyncr.in | www.somanycollegeofpharmacy.in
ADMISSION HELPLINE 9541069998 | 01274-261239 | 9034717734 | 7082539268

मिड या स्मॉल-कैप फंड: 10 साल में किसने दिखाया दम

दोनों श्रेणियों ने दिया शानदार रिटर्न, लेकिन जोखिम और उतार-चढ़ाव में मिड-कैप

दोनों का निफ्टी-50 से बेहतर रहा प्रदर्शन

- सिर्फ ज्यादा रिटर्न पर न करें फैसला, पहले जोखिम व वोलेटिलिटी भी समझें
- स्मॉल-कैप ने बेंचमार्क को पीछे छोड़ा, मिड-कैप कम जोखिम संग बेहतर
- विशेषज्ञ बोले, गिरावट से घबराने के बजाय विविधीकृत पोर्टफोलियो अपनाएं
- दोनों फंडों में संपत्ति बनाने की क्षमता, लेकिन क्षमता के अनुसार करें फैसला
- विविधीकरण और लंबी अवधि बेहतर रिटर्न दिलाने की सबसे कारगर रणनीति

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल होता है कि लंबी अवधि के लिए मिड-कैप फंड चुनें या स्मॉल-कैप फंड। दोनों श्रेणियों ने पिछले एक दशक में शानदार रिटर्न दिए हैं और निवेशकों की संपत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि की है। हालांकि, सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश का फैसला करना सही नहीं होता। किसी भी निवेश विकल्प का चयन करते समय उसके जोखिम, उतार-चढ़ाव, निवेश अवधि और वित्तीय लक्ष्य को भी ध्यान में रखना जरूरी है। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 10 वर्षों में मिड-कैप और स्मॉल-कैप दोनों श्रेणियों ने लंबी अवधि के निवेशकों को आकर्षक रिटर्न दिया है। जहां स्मॉल-कैप फंड का औसत 10 वर्षीय वार्षिक रिटर्न (सीएजीआर) 16.69 प्रतिशत रहा, वहीं मिड-कैप फंड ने 16 प्रतिशत का औसत रिटर्न दिया। यानी दोनों के बीच रिटर्न का अंतर बहुत अधिक नहीं है, लेकिन जोखिम और प्रदर्शन के तरीके में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

स्मॉल-कैप ने बेंचमार्क को पछाड़ा

आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप फंड अपने बेंचमार्क बीएसई 250 स्मॉलकैप टोटल रिटर्न इनडेक्स से बेहतर प्रदर्शन करने में सफल रहे। दूसरी ओर, मिड-कैप फंड अपने बेंचमार्क बीएसई 150 मिडकैप टोटल रिटर्न इनडेक्स से थोड़ा पीछे रहे। इससे यह संकेत मिलता है कि स्मॉल-कैप फंड मैनेजरों ने बेहतर स्टॉक चयन के जरिए अतिरिक्त रिटर्न (अल्फा) बनाने में सफलता हासिल की। 10 वर्षों के प्रदर्शन में निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप डायरेक्ट, क्वांट स्मॉल कैप, एक्सिस स्मॉल कैप और एसबीआई स्मॉल कैप जैसे फंड शीर्ष प्रदर्शनकर्ताओं में शामिल रहे। वहीं मिड-कैप श्रेणी में इनवेस्को इंडिया मिड कैप, एडलवाइस मिड कैप, निप्पॉन इंडिया ग्रोथ और कोटक मिडकैप फंड ने बेहतरीन प्रदर्शन किया।

रिटर्न के साथ जोखिम भी समझें

अक्सर निवेशक केवल अधिक रिटर्न देखकर निवेश कर देते हैं, जबकि वास्तविक तस्वीर जोखिम के आंकड़ों से सामने आती है। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप फंड का स्टैंडर्ड डिविएशन 20.33 प्रतिशत रहा, जबकि मिड-कैप फंड का यह आंकड़ा 17.88 प्रतिशत था। इसका मतलब है कि स्मॉल-कैप फंड में कीमतों का उतार-चढ़ाव ज्यादा रहा और इनमें निवेश करने वालों को अधिक अस्थिरता का सामना करना पड़ा। इसी तरह जोखिम के मुकाबले मिलने वाले रिटर्न को मापने वाले शार्प रेशियो में भी मिड-कैप फंड आगे रहे। मिड-कैप फंड का शार्प रेशियो 0.79 रहा, जबकि स्मॉल-कैप फंड का 0.69। इसका अर्थ है कि मिड-कैप फंड ने अपेक्षाकृत कम जोखिम लेकर बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न दिया। हालांकि दोनों श्रेणियों का सॉर्टिनो रेशियो समान रहा, जिससे स्पष्ट होता है कि डाउनसाइड जोखिम को ध्यान में रखने पर दोनों का प्रदर्शन लगभग बराबर रहा।

लंबी अवधि के निवेशकों को मिला फायदा : विशेषज्ञों का मानना है कि पिछले 10 वर्षों की सबसे बड़ी सीख यही है कि जिन्होंने बाजार की गिरावट के दौरान घबराकर निवेश नहीं निकाला और लंबे समय तक निवेश बनाए रखा, उन्हें दोनों श्रेणियों में शानदार रिटर्न मिला। बाजार में गिरावट हर चक्र का सामान्य हिस्सा है और इसे निवेश यात्रा का स्वाभाविक चरण माना जाना चाहिए। मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड को केवल अधिक उतार-चढ़ाव के कारण नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। लंबी अवधि में दोनों श्रेणियों ने निफ्टी 50 से बेहतर प्रदर्शन किया है और निवेशकों के लिए अच्छी संपत्ति बनाने की क्षमता दिखाई है।

विविधीकरण सबसे बेहतर रणनीति

विशेषज्ञों का कहना है कि पूरे निवेश को केवल स्मॉल-कैप या केवल मिड-कैप में लगाना समझदारी नहीं है। बेहतर रणनीति यह है कि निवेशकों का पोर्टफोलियो सभी मार्केट कैप में संतुलित रूप से विभाजित हो। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक के 10 लाख रुपये पूरी तरह स्मॉल-कैप फंड में लगे हों और बाजार में गिरावट आए, तो पूरे पोर्टफोलियो पर उसका असर पड़ेगा। जबकि यदि पोर्टफोलियो में लगभग 55 प्रतिशत लार्ज-कैप, 23 प्रतिशत मिड-कैप और 22 प्रतिशत स्मॉल-कैप का संतुलित निवेश हो, तो बाजार की गिरावट का प्रभाव काफी कम हो सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार हमेशा विविधीकरण को सफल निवेश की सबसे महत्वपूर्ण रणनीति मानते हैं।

किस निवेशक के लिए कौन सा फंड?

यदि आपकी निवेश अवधि 7 से 10 वर्ष या उससे अधिक है और आप बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन कर सकते हैं, तो स्मॉल-कैप फंड आपके पोर्टफोलियो में बेहतर वृद्धि की संभावना जोड़ सकते हैं। वहीं यदि आप अच्छा रिटर्न चाहते हैं लेकिन अपेक्षाकृत कम जोखिम लेना पसंद करते हैं, तो मिड-कैप फंड अधिक उपयुक्त विकल्प हो सकते हैं। पहली बार निवेश करने वालों के लिए भी सलाह दी जाती है कि वे सीधे स्मॉल-कैप में बड़ी राशि लगाने के बजाय लार्ज-कैप और मिड-कैप के साथ सीमित हिस्सेदारी स्मॉल-कैप में रखें।

एसआईपी धन सृजन का सबसे प्रभावी तरीका

पिछले 10 वर्षों का रिकॉर्ड बताता है कि मिड-कैप और स्मॉल-कैप दोनों श्रेणियों ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। जहां स्मॉल-कैप फंड ने थोड़ा अधिक रिटर्न और बेहतर अल्फा दिया, वहीं मिड-कैप फंड ने कम उतार-चढ़ाव और बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन के दम पर अपनी अलग पहचान बनाई। निवेशकों को केवल अधिक रिटर्न के आकर्षण में निर्णय लेने के बजाय अपने वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के आधार पर पोर्टफोलियो तैयार करना चाहिए। नियमित एसआईपी, लंबी अवधि का नजरिया और विविधीकृत निवेश रणनीति ही धन सृजन का सबसे प्रभावी तरीका साबित हो सकती है।

बहुत ज्यादा एसआईपी से नहीं, सही रणनीति से बनेगी दौलत

नया म्यूचुअल फंड जोड़ने से पहले जांचें कि वास्तव में जरूरत है या नहीं

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में बढ़ती जागरूकता के साथ म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बड़ी संख्या में निवेशक हर महीने सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश कर रहे हैं। अक्सर यह धारणा बन जाती है कि जितने अधिक म्यूचुअल फंड होंगे, उतना ही बेहतर रिटर्न मिलेगा और जोखिम कम होगा। लेकिन निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि यह सोच हमेशा सही नहीं होती। कई बार जरूरत से ज्यादा फंड रखने से पोर्टफोलियो में एक जैसी कंपनियों का दोहराव बढ़ जाता है, जिससे वास्तविक विविधीकरण नहीं हो पाता और निवेश का उद्देश्य भी प्रभावित हो सकता है।

फंडों की संख्या नहीं, गुणवत्ता और उद्देश्य है महत्वपूर्ण

विशेषज्ञों के अनुसार, किसी निवेशक के लिए कितनी एसआईपी या कितने म्यूचुअल फंड होने चाहिए, इसका कोई तय नियम नहीं है। यह पूरी तरह निवेश राशि, वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता पर निर्भर करता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 10 से 15 हजार रुपये की एसआईपी करता है, तो उसके लिए चार से छह अच्छे म्यूचुअल फंड पर्याप्त हो सकते हैं। वहीं, 40 से 50 हजार रुपये या उससे अधिक की मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक आठ से दस फंड तक रख सकते हैं। हालांकि, इन फंडों का चयन अलग-अलग श्रेणियों और अलग-अलग एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) से होना चाहिए, ताकि पोर्टफोलियो में वास्तविक विविधीकरण बना रहे।

ओवर-डाइवर्सिफिकेशन से भी हो सकता है नुकसान

निवेश में विविधीकरण जरूरी है, लेकिन जरूरत से ज्यादा विविधीकरण नुकसानदेह भी हो सकता है। यदि किसी निवेशक के कई फंड एक ही तरह की कंपनियों में निवेश करते हैं, तो फंडों की संख्या बढ़ने के बावजूद जोखिम कम नहीं होता। उदाहरण के लिए यदि किसी निवेशक के पास 10 इक्विटी फंड हैं और अधिकांश फंड एचडीएफसी बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक जैसी बड़ी कंपनियों में ही निवेश करते हैं, तो अलग-अलग स्कीम होने के बावजूद वास्तविक निवेश लगभग समान रहेगा। ऐसे में पोर्टफोलियो केवल दिखने में बड़ा होगा, लेकिन उसमें नई विविधता नहीं जुड़ेगी।

पोर्टफोलियो ओवरलैप पर रखें नजर

म्यूचुअल फंड चुनते समय सबसे महत्वपूर्ण बात पोर्टफोलियो ओवरलैप होती है। इसका अर्थ है कि दो अलग-अलग फंडों में कितनी समान कंपनियां शामिल हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि दो फंडों के बीच 20 से 30 प्रतिशत तक ओवरलैप है, तो इसे सामान्य माना जा सकता है। लेकिन यदि यह 40 से 50 प्रतिशत या उससे अधिक हो जाए, तो निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करनी चाहिए। अधिक ओवरलैप का मतलब है कि अलग-अलग फंड रखने के बावजूद निवेश लगभग एक जैसी कंपनियों में ही हो रहा है।

हर नया एनएफओ खरीदना जरूरी नहीं

कई निवेशक बाजार में आने वाले हर नए म्यूचुअल फंड ऑफर (एनएफओ) में निवेश कर देते हैं। उन्हें लगता है कि नया फंड भविष्य में बेहतर रिटर्न देगा। जबकि वास्तविकता यह है कि किसी भी एनएफओ में निवेश करने से पहले उसकी निवेश रणनीति, उद्देश्य और मौजूदा पोर्टफोलियो से उसका अंतर समझना जरूरी है। यदि नया फंड वही काम कर रहा है जो पहले से मौजूद फंड कर रहे हैं, तो उसमें निवेश करना केवल दोहराव बढ़ाएगा।

संतुलित एसेट एलोकेशन है सफलता की कुंजी

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेशकों को बाजार की तेजी या गिरावट देखकर फैसले लेने से बचना चाहिए। इसके बजाय लक्ष्य आधारित निवेश रणनीति अपनानी चाहिए। इक्विटी पोर्टफोलियो में लगभग 55 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 25 प्रतिशत मिड कैप और 20 प्रतिशत स्मॉल कैप फंड में रखने से संतुलन बनाया जा सकता है। इसके साथ ही जरूरत के अनुसार डेट फंड या अन्य परिसंपत्तियों में भी निवेश रखना चाहिए, ताकि बाजार में उतार-चढ़ाव का प्रभाव कम हो।

छोटी-छोटी बचत से बनाएं बड़ा फंड, भविष्य होगा सुरक्षित

- लाइफस्टाइल से समझौता किए बिना हर माह कुछ न कुछ बचत करें
- अच्छी बचत का मतलब कंजूसी नहीं, बल्कि समझदारी से खर्च करना
- आय, खर्च और निवेश के बीच संतुलन बनाया जाना जरूरी
- स्मार्ट मनी मैनेजमेंट से वर्तमान और भविष्य दोनों होंगे खुशहाल
- हर खरीदारी से पहले खुद से सवाल पूछें क्या यह वास्तव में जरूरी है

मनी मंत्रा

बिजनेस डेस्क

बढ़ती महंगाई, बदलती जीवनशैली और बढ़ते खर्चों के बीच हर व्यक्ति की सबसे बड़ी चिंता होती है कि आखिर बचत कैसे बढ़ाई जाए। आम धारणा यह है कि पैसे बचाने के लिए अपनी पसंद, शौक और मनोरंजन पर रोक लगानी पड़ती है, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि अच्छी बचत का मतलब कंजूसी करना नहीं, बल्कि समझदारी से खर्च करना है। यदि आय, खर्च और निवेश के बीच संतुलन बनाया जाए तो बिना लाइफस्टाइल से समझौता किए हर महीने अच्छी-खासी बचत की जा सकती है। दरअसल, आज के समय में वित्तीय सुरक्षा केवल अधिक कमाई पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि कमाई का कितना हिस्सा सही तरीके से उपयोग और निवेश किया जा रहा है। यदि व्यक्ति छोटी-छोटी वित्तीय आदतों में बदलाव कर ले तो वह न केवल अपने मासिक खर्चों को नियंत्रित कर सकता है, बल्कि भविष्य के बड़े वित्तीय लक्ष्यों जैसे घर खरीदना, बच्चों की शिक्षा, रिटायरमेंट और इमरजेंसी फंड को भी आसानी से पूरा कर सकता है।

खर्चों का रिकॉर्ड रखना बचत की पहली सीढ़ी

वित्तीय योजना की शुरुआत हमेशा इस सवाल से होती है कि आपका पैसा आखिर खर्च कहां हो रहा है। अधिकांश लोग यह मानते हैं कि वे बहुत अधिक खर्च नहीं करते, लेकिन जब महीनेभर के बैंक स्टेटमेंट या डिजिटल भुगतान का रिकॉर्ड देखा जाता है तो कई ऐसे खर्च सामने आते हैं, जिनकी वास्तव में कोई जरूरत नहीं होती। बिना इस्तेमाल वाले ओटीटी सब्सक्रिप्शन, बार-बार ऑनलाइन खाना मंगाना, छोटी-छोटी ऑनलाइन शॉपिंग, महंगी कॉफी या बार-बार कैब का उपयोग जैसी आदतें महीने के अंत तक हजारों रुपये का अतिरिक्त खर्च करा देती हैं। यदि व्यक्ति अपने सभी खर्चों को मोबाइल ऐप, एक्सेल शीट या डायरी में दर्ज करना शुरू कर दे तो उसे तुरंत समझ आ जाएगा कि बचत की सबसे अधिक संभावना कहां है।

जरूरत और वैल्यू में फर्क समझना जरूरी

अक्सर लोग आकर्षक ऑफर या फैशन के प्रभाव में ऐसी चीजें खरीद लेते हैं, जिनकी उन्हें वास्तव में आवश्यकता नहीं होती। वित्तीय विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर खरीदारी से पहले खुद से तीन सवाल पूछें क्या यह वास्तव में जरूरी है? क्या इसका उपयोग लंबे समय तक होगा? और क्या इसे अभी खरीदना आवश्यक है? ऐसी वस्तुओं या अनुभवों पर खर्च करना बेहतर माना जाता है जो लंबे समय तक लाभ दें। उदाहरण के लिए, कोई नई स्किल सीखना, स्वास्थ्य पर खर्च करना, परिवार के साथ यात्रा करना या अच्छी किताबें खरीदना ऐसे निवेश हैं जो लंबे समय तक मूल्य देते हैं। इसके विपरीत केवल दिखावे के लिए की गई खरीदारी कुछ समय बाद महत्व खो देती है।

'फन बजट' बनाएं, बचत भी होगी व खुशी भी

कई लोग बचत करने के उत्साह में अपने सभी मनोरंजन संबंधी खर्च बंद कर देते हैं। शुरुआत में यह आसान लगता है, लेकिन कुछ समय बाद व्यक्ति मानसिक रूप से थक जाता है और फिर अचानक जरूरत से ज्यादा खर्च करने लगता है। इस स्थिति से बचने के लिए विशेषज्ञ हर महीने एक निश्चित राशि केवल मनोरंजन, घूमने-फिरने, फिल्म देखने या दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए अलग रखने की सलाह देते हैं। इसे 'फन बजट' कहा जाता है। इससे व्यक्ति बिना किसी अपराधबोध के अपनी पसंद की गतिविधियों का आनंद ले सकता है और उसका कुल बजट भी नहीं बिगड़ता।

लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन बड़ा वित्तीय जाल

वित्तीय दुनिया में एक शब्द काफी लोकप्रिय है। 'लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन'। इसका मतलब है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे व्यक्ति अपने खर्च भी बढ़ा देता है। नई नौकरी मिलने पर महंगा मोबाइल खरीद लेना, वेतन बढ़ते ही लग्जरी कार की ईएमआई शुरू कर देना या हर सप्ताह महंगे रेस्टोरेंट जाना इसी प्रवृत्ति के उदाहरण हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि वेतन बढ़ने पर सबसे पहले बचत और निवेश की राशि बढ़ानी चाहिए। यदि हर वेतन वृद्धि का कम से कम 40 से 50 प्रतिशत हिस्सा सीधे एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में लगाया जाए तो कुछ वर्षों में बड़ा निवेश कोष तैयार किया जा सकता है।

रोजमर्रा की छोटी आदतों में करें बड़ा बदलाव

बचत के लिए हमेशा बड़े बदलाव की जरूरत नहीं होती। छोटी-छोटी आदतें भी लंबी अवधि में बड़ा असर डालती हैं। उदाहरण के लिए, किसी भी सामान को खरीदने से पहले ऑनलाइन कीमतों की तुलना करना, कैशबैक और डिस्काउंट ऑफर का लाभ उठाना, अनावश्यक गैजेट अपग्रेड से बचना, बिजली और पानी की बचत करना तथा सप्ताह में कुछ दिन बाहर खाने की बजाय घर का भोजन करना जैसी आदतें हर महीने अच्छी रकम बचा सकती हैं। इसी तरह क्रेडिट कार्ड का उपयोग केवल उतना ही करें, जितना समय पर चुका सकें। अनावश्यक ईएमआई से बचना और हर महीने आय का कम से कम 20 से 30 प्रतिशत बचत या निवेश के लिए अलग रखना वित्तीय अनुशासन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

निवेशकों को मिला बड़ा फायदा

5 वर्ष में 101 इक्विटी फंड्स ने दोगुना किया निवेश

- 310 में से हर तीसरे फंड ने दिया 100% से अधिक रिटर्न
- चार स्कीमों ने सिर्फ तीन साल में किया कमाल
- पुराने रिटर्न देखकर निवेश न करें, सेक्टोरल फंड्स में लें एंट्री

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में पिछले दो वर्षों के उतार-चढ़ाव के बावजूद लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले पांच वर्षों में 310 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 101 फंड्स ने निवेशकों का पैसा दोगुना या उससे अधिक कर दिया। यानी हर तीन में से लगभग एक इक्विटी फंड ने 100 फीसदी से ज्यादा एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। इतना ही नहीं, चार म्यूचुअल फंड ऐसे भी रहे जिन्होंने केवल तीन वर्षों में ही निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश का फैसला केवल पुराने रिटर्न के आधार पर नहीं करना चाहिए, क्योंकि बाजार और सेक्टर का प्रदर्शन समय के साथ बदलता रहता है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और पीएसयू फंड्स रहे सबसे आगे

पांच साल के प्रदर्शन पर नजर डालें तो सबसे अधिक फायदा सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स में निवेश करने वालों को मिला। खासतौर पर इंफ्रास्ट्रक्चर, पीएसयू, पावर और मिडकैप से जुड़े फंड्स ने जबरदस्त रिटर्न दिए।

सबसे आगे आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड रहा, जिसने पांच साल में करीब 188 प्रतिशत का एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। यानी एक लाख रुपये का निवेश लगभग 2.88 लाख रुपये हो गया। इसके बाद एसबीआई पीएसयू फंड और एलआईसी एमएफ इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने करीब 183 प्रतिशत का रिटर्न दिया। वहीं आदित्य बिड़ला सन लाइफ पीएसयू इक्विटी फंड ने 179 प्रतिशत, डीएसपी इंडिया टाइगर फंड ने 176.51 प्रतिशत और निप्पॉन इंडिया पावर एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने लगभग 174 प्रतिशत का रिटर्न दिया। डायवर्सिफाइड मिडकैप श्रेणी में मोतीलाल ओसवाल मिडकैप फंड ने पांच वर्षों में करीब 172 प्रतिशत का रिटर्न देकर निवेशकों को शानदार कमाई कराई।

तीन साल में पैसा दोगुना करने वाले फंड

अगर केवल तीन वर्षों के प्रदर्शन को देखें तो एचडीएफसी डिफेंस फंड सबसे आगे रहा। इस फंड ने करीब 174 प्रतिशत का एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। यानी तीन साल पहले लगाए गए एक लाख रुपये बढ़कर लगभग 2.74 लाख रुपये हो गए। इसके अलावा बंधन स्मॉल कैप फंड ने 106 प्रतिशत, क्वांट बीएफएसआई फंड ने 101.73 प्रतिशत और एलआईसी एमएफ इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने 100.24 प्रतिशत का रिटर्न देकर निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया। हालांकि एसबीआई पीएसयू फंड 99.12 प्रतिशत रिटर्न के साथ इस सूची में शामिल होने से मामूली अंतर से चूक गया।

किन सेक्टरों ने दिलाया सबसे ज्यादा फायदा

पिछले कुछ वर्षों में जिन सेक्टरों ने निवेशकों को सबसे अधिक लाभ पहुंचाया, उनमें डिफेंस, इंफ्रास्ट्रक्चर, पीएसयू, पावर, स्मॉलकैप, हेल्थकेयर और बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाएं (बीएफएसआई) प्रमुख रहे। इन क्षेत्रों में सरकार के पूंजीगत खर्च, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, सार्वजनिक उपक्रमों के बेहतर प्रदर्शन और आर्थिक गतिविधियों में तेजी का सकारात्मक असर देखने को मिला। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि सेक्टोरल फंड हमेशा एक जैसी तेजी नहीं दिखाते। इनमें तेजी और मंदी आर्थिक चक्र के अनुसार आती-जाती रहती है।

क्या अब भी इनमें निवेश करना सही रहेगा?

आनंद राठी वेल्थ के संयुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी फिरोज अजीज का कहना है कि निवेशकों को केवल पिछले शानदार रिटर्न देखकर किसी सेक्टोरल या थीमैटिक फंड में निवेश नहीं करना चाहिए। किसी भी फंड का पिछला प्रदर्शन भविष्य में उसी तरह के रिटर्न की गारंटी नहीं देता। उनके अनुसार, सेक्टोरल फंड्स में सही समय पर निवेश करना और सही समय पर बाहर निकलना काफी महत्वपूर्ण होता है।

दो साल में कई स्टार फंड्स की रफ्तार हुई धीमी

- पांच वर्षों में शानदार प्रदर्शन करने वाले कई फंड्स का पिछले दो वर्षों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर रहा है।
- उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने पिछले दो वर्षों में केवल 5.28 प्रतिशत रिटर्न दिया। एसबीआई पीएसयू फंड का रिटर्न 0.75 प्रतिशत रहा, जबकि आदित्य बिड़ला सन लाइफ पीएसयू इक्विटी फंड और इनवेस्को इंडिया पीएसयू इक्विटी फंड ने इस अवधि में नकारात्मक रिटर्न दर्ज किया।
- इसी तरह एचडीएफसी इंफ्रास्ट्रक्चर फंड और डीएसपी इंडिया टाइगर फंड का प्रदर्शन भी पिछले दो वर्षों में काफी धीमा रहा। इससे साफ है कि किसी सेक्टर में तेज रैली के बाद कुछ समय तक ठहराव या गिरावट आना सामान्य बात है।

अटल टिंकरिंग लैब संचालन के लिए चार दिवसीय प्रशिक्षण

शिक्षकों को रोबोटिक्स, 3-डी प्रिंटर और आधुनिक उपकरणों की दी जानकारी

- प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण को बढ़ावा देने पर हुई चर्चा
- विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार क्षमता विकसित करना उद्देश्य

नारनौल। प्रशिक्षण का अवलोकन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शिक्षा विभाग हरियाणा एवं समग्र शिक्षा हरियाणा परिषद पंचकूला के निर्देशानुसार जिले के 17 सरकारी विद्यालयों में स्थापित अत्याधुनिक अटल टिंकरिंग लैब के प्रभावी संचालन के लिए 15 से 18 जुलाई तक राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोरियावास में चार दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसका उद्देश्य विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों को आधुनिक तकनीकी उपकरणों के प्रभावी उपयोग में दक्ष बनाकर विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, नवाचार, रचनात्मकता तथा समस्या-समाधान क्षमता का विकास करना था। प्रशिक्षण में जिले के 17 अटल टिंकरिंग लैब वाले विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, प्रत्येक विद्यालय से दो अटल टिंकरिंग लैब प्रभारी शिक्षकों तथा सभी पीएम श्री विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों ने सक्रिय भागीदारी की। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को अनुभवात्मक एवं परियोजना-आधारित शिक्षण पद्धतियों से परिचित कराया गया, ताकि विद्यालयों में विज्ञान एवं गणित की शिक्षा को अधिक प्रभावी और प्रयोगात्मक बनाया जा सके। मास्टर ट्रेनर्स ने प्रतिभागियों को अटल टिंकरिंग लैब का विस्तृत ओरिएंटेशन देते हुए लैब में उपलब्ध सभी आधुनिक उपकरणों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों ने 3-डी प्रिंटर, रोबोटिक्स किट, सेंसर, इलेक्ट्रॉनिक कॉम्पोनेंट्स, डिजिटल मल्टीमीटर, ब्रेडबोर्ड, एलईडी, बैटरी एवं रेजिस्टेंस सहित विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया। ब्रेडबोर्ड की सहायता से विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक सर्किट तैयार करवाए गए तथा रेजिस्टेंस इन सीरीज एवं रेजिस्टेंस इन पैरेलल जैसी अवधारणाओं को प्रयोगात्मक गतिविधियों के माध्यम से समझाया गया। साथ ही डिजाइन थिंकिंग, प्रोटोटाइप निर्माण, इनोवेटिव टीचिंग, प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण तथा अटल टिंकरिंग लैब गतिविधियों को नियमित शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ने के प्रभावी तरीकों पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप महत्वपूर्ण पहल

प्रशिक्षण का शुभारंभ जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. विश्वेश्वर, जिला परियोजना समन्वयक दिलबाग सिंह, खंड शिक्षा अधिकारी अटेली कुसुम यादव व जिला विज्ञान विशेषज्ञ रविंद्र कुमार ने किया। इस अवसर पर सीएमजीजीए महेंद्रगढ़ प्रखर ने भी अटल टिंकरिंग लैब एवं उसमें स्थापित आधुनिक उपकरणों का अवलोकन किया। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. विश्वेश्वर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार, रचनात्मक सोच तथा 21वीं सदी के कौशल विकसित करना शिक्षा विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। अटल टिंकरिंग लैब इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को भी आधुनिक तकनीकों के साथ सीखने, प्रयोग करने और नवाचार करने के समान अवसर प्राप्त होंगे।

क्या है अटल टिंकरिंग लैब

जिला विज्ञान विशेषज्ञ रविंद्र कुमार ने बताया कि अटल टिंकरिंग लैब भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है, जिसका उद्देश्य कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता, नवाचार एवं समस्या-समाधान क्षमता का विकास करना है। यह पहल विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें अपने विचारों को मॉडल एवं नवाचारी परियोजनाओं के रूप में विकसित करने का मंच भी प्रदान करती है।

नवाचार की संस्कृति को मिलेगा बढ़ावा

जिला परियोजना समन्वयक दिलबाग सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान लैब उपकरणों के सुरक्षित एवं प्रभावी उपयोग, गतिविधियों के संचालन तथा परियोजना-आधारित शिक्षण पर विशेष बल दिया गया। प्रशिक्षकों का मानना है कि प्रशिक्षित शिक्षक एवं विद्यालय प्रमुख अटल टिंकरिंग लैब का प्रभावी संचालन सुनिश्चित करेंगे, जिससे सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई उपलब्धियां हासिल कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकेंगे। कार्यक्रम के सफल आयोजन में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोरियावास के प्राचार्य डॉ. सतबीर इंदौरा व स्टाफ का योगदान रहा।

मॉडर्न स्कूल में हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

महेंद्रगढ़। मॉडर्न वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भोजावास में हिंदी सुलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता कक्षा पहली से 12वीं तक के विद्यार्थियों के बीच कक्षा स्तर पर करवाई गई। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपने हस्त कौशल के बल पर सुंदर लेखन कार्य किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को संस्था निदेशक राजकुमार यादव, हवा सिंह यादव संस्था प्रबंध समिति सदस्य मनोज कुमार, नवीन कुमार, संस्था प्राचार्य अनिल कुमार, उपप्राचार्य शकुंत शहरावत, वरिष्ठ अध्यापक राम सिंह, राकेश कुमार तथा समस्त स्टाफ सदस्यों ने शुभकामनाएं दीं। निदेशक राजकुमार यादव ने बताया कि हिंदी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन करवाने से विद्यार्थियों के सुंदर लेख व शुद्ध वर्तनी का विकास होता है।

टॉपर छात्रा भावना को किया सम्मानित

नारनौल। पीएम श्री सेठ मुरलीधर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय निवाजनगर की छात्रा भावना ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा की परीक्षा में 90.02 प्रतिशत अंक हासिल कर पूरे जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। भावना की इस गौरवमयी सफलता पर सर्व अनुसूचित जाति संघर्ष समिति के पदाधिकारियों ने विशेष रूप से निवाजनगर पहुंचकर छात्रा को सम्मानित कर हौसला बढ़ाया। समिति के प्रधान चंदन सिंह जालवान, महासचिव एवं कबीर सामाजिक उत्थान संस्था दिल्ली के वाइस चेयरमैन बिरदी चंद गोठवाल, कोषाध्यक्ष प्यारेलाल चवन व सचिव सुमेर सिंह गोठवाल ने संयुक्त रूप से भावना को एक प्रशंसा पत्र, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर का चित्र व 2100 का नकद पारितोषिक भेंट कर उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

खबर संक्षेप

एनसीसी बटालियन का वार्षिक प्रशिक्षण शिविर आरंभ, 381 कैडेट लेंगे सैन्य प्रशिक्षण

महेंद्रगढ़। 16 हरियाणा एनसीसी बटालियन नारनौल का संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर शनिवार को आरपीएस डिग्री कॉलेज बलाना में शुरू हुआ। दस दिवसीय शिविर में महेंद्रगढ़, नारनौल और आसपास के क्षेत्रों के 381 सीनियर व जूनियर डिवीजन/विंग कैडेट भाग ले रहे हैं। शिविर का शुभारंभ कैम्प कमांडेंट कर्नल संदीप कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि एनसीसी युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्र सेवा की भावना विकसित करता है। शिविर में कैडेटों को ड्रिल, वेपन ट्रेनिंग, मैप रीडिंग, फायरिंग, प्राथमिक उपचार, आपदा प्रबंधन, योग और व्यक्तित्व विकास सहित विभिन्न प्रशिक्षण दिए जाएंगे। शिविर का उद्देश्य युवाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने के साथ-साथ उन्हें जिम्मेदार एवं जागरूक नागरिक बनने के लिए प्रेरित करना है।

टैगोर स्कूल में फिजिक्स प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

महेंद्रगढ़। टैगोर सीनियर सेकेंडरी स्कूल में विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि और वैज्ञानिक सोच विकसित करने के उद्देश्य से फिजिक्स प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें कक्षा 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता में स्क्रीनिंग टेस्ट के बाद फाइनल राउंड हुआ, जिसमें रैपिड फायर, कॉन्सेप्ट चैलेंज और न्यूमेरिकल सॉल्विंग जैसे चरण शामिल रहे। पलक और दिव्या ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि कार्तिक, अश्वनी, आर्यन और सौरभ संयुक्त रूप से द्वितीय रहे। विजेता विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

यदुवंशी स्कूल में क्विज प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

महेंद्रगढ़। यदुवंशी स्कूल में शनिवार गतिविधि के तहत क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें विद्यार्थियों ने गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और सामान्य ज्ञान से जुड़े सवालों के जवाब देकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में पिक्चर राउंड भी आकर्षण का केंद्र रहा। टीम जीनियस और टीम स्मार्ट ने संयुक्त रूप से प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि टीम विस्डम द्वितीय और टीम ब्राइट तृतीय स्थान पर रही। विद्यालय प्रबंधन ने विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि ऐसी गतिविधियां बच्चों में आत्मविश्वास, तार्किक सोच और टीमवर्क की भावना को मजबूत करती हैं।

आरआरसीएम का नीट में उम्दा प्रदर्शन

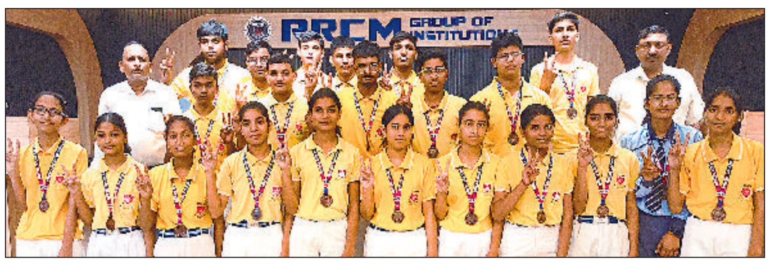

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

आरआरसीएम संस्थान के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट में शानदार प्रदर्शन करते हुए सफलता हासिल की है। संस्थान के 20 से अधिक विद्यार्थियों ने परीक्षा क्वालीफाई कर क्षेत्र और संस्थान का नाम रोशन किया है।संस्थान की सफलता का श्रेय उसकी विशेष शैक्षणिक व्यवस्था और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए संचालित कोचिंग सेक्शन को दिया गया। यहां नीट, जेईई मेंस और जेईई एडवांस की तैयारी के लिए अलग कोचिंग ब्लॉक स्थापित किया गया है, जहां विद्यार्थियों को परीक्षा पैटर्न के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता है।चेयरमैन रोशनलाल यादव ने कहा कि विद्यार्थियों की सफलता उनके अनुशासन और संस्थान की आधुनिक सुविधाओं का परिणाम है। निदेशक विपुल राव ने कहा कि ग्रामीण विद्यार्थियों को बड़े शहरों जैसी सुविधाएं और मार्गदर्शन उपलब्ध कराना संस्थान का लक्ष्य है। प्रिंसिपल हरिप्रकाश शर्मा ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि बेहतर संसाधन और निरंतर प्रयास से सफलता हासिल की जा सकती है।

विद्या भारती पब्लिक स्कूल में रेड डे पर बच्चों ने दिखाया उत्साह

नारनौल। विद्या भारती पब्लिक स्कूल निजामपुर के प्राइमरी विंग में रेड डे उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नर्सरी से प्रथम कक्षा तक के सभी विद्यार्थी लाल रंग की ड्रेस में विद्यालय पहुंचे। पूरे विद्यालय परिसर में लाल रंग की मनमोहक छटा देखने को मिली। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत कर सभी का दिल जीत लिया। अंत में बच्चों व विद्यालय प्रबंधन ने मिलकर सेल्फी ली, जिसने इस दिन की मधुर यादों को और भी खास बना दिया। चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव, वाइस चेयरपर्सन डॉ. ऊषा यादव, प्रबंधक निदेशक एडवोकेट पियूष यादव व निदेशिका डॉ. रविन्द्रा यादव ने बच्चों के साथ समय बिताया, उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम का संचालन किड्स ब्लॉक इंचार्ज विजय सोनी ने किया। इस मौके पर प्राचार्य अजीत सिंह, उप प्राचार्य प्रवीण कुमार सहित अध्यापकगण उपस्थित थे।

एसडी ककराला के विद्यार्थियों ने नीट में लहराया परचम

कनीना राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा नीट के घोषित परिणामों में एसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल ककराला के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एक बार फिर उत्कृष्टता की मिसाल कायम की है। विद्यालय के नीट बैच के 98 फीसदी विद्यार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। यह उपलब्धि विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, अनुभवी शिक्षकों के उचित मार्गदर्शन तथा अभिभावकों के सतत सहयोग का परिणाम है। चेयरमैन जगदेव यादव ने बताया कि चयनित विद्यार्थियों में यश ने 99.03 परसेंटाइल प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त निधि ने 97.82 परसेंटाइल, मुस्कान ने 95.19 परसेंटाइल, संजना ने 94.36 परसेंटाइल, रूपेश ने 90.55 परसेंटाइल, तमन्ना ने 90.52 परसेंटाइल, ऋतिक ने 89.03 परसेंटाइल प्राप्त कर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया।

कारोता स्कूल में किया पौधरोपण

नारनौल। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत विजन यूथ क्लब की ओर से राजकीय प्राथमिक विद्यालय कारोता में पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर एडवोकेट विकाश लाठर बताया कि सभी उपस्थित विद्यार्थियों को एक-एक पौधा घर पर लगाने के लिए वितरित किए व सभी उपस्थित जन से पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई गई। जिसमें नीम, जामुन, शहतुत, अनार, कचनार, शीशम, गुड़हल, कढ़ी पत्ता के पौधे शामिल थे।

सूचना

मैं, अन्जु बाई (Anju Bai) पुत्री श्री प्रदीप कुमार निवासी मोहनपुर, तहसील कनीना, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) बयान करती हूं कि मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम अन्जु बाई (Anju Bai) लिखा हुआ है जबकि स्कूल रिकार्ड में अन्जु (Anju) है जो कि सही व दुरूस्त है। अब मेरे आधार कार्ड में नाम अन्जु बाई (Anju Bai) के स्थान पर अन्जु (Anju) किया जाए जो कि सही व दुरूस्त है।

NOTICE

I, Kishori Lal yadav S/o Sh. Ramnarayan R/o Dholera, Teh. Nangal Choudhary, Distt. Mahendergarh (HR) declare that in my PPO No 204198904762 my wife's name is wrongly recorded as Bhagyavati her correct name is Bhagwati Devi.

नीट में इंडस वैली के 4 विद्यार्थी सफल

महेंद्रगढ़। हाल ही में घोषित नीट-2026 परीक्षा परिणाम में इंडस वैली पब्लिक स्कूल दौंगड़ा अहीर के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय एवं क्षेत्र का नाम रोशन किया। प्राचार्य जयवीर सिंह यादव ने बताया कि अंशु पुत्री सुरेंद्र कोथल खुर्द ने 605 अंक, ज्योति पुत्री संदीप रातां ने 573 अंक, सुषमा पुत्री रामपाल कटकई ने 573 अंक तथा निधि पुत्री सुधीर मुंडिया खेड़ा ने 440 अंक कैटेगरी प्राप्त कर अपनी-अपनी श्रेणी में सफलता हासिल की। इन विद्यार्थियों की उपलब्धि से विद्यालय में हर्ष और उत्साह का माहौल है। बताया कि इंडस वैली पब्लिक स्कूल, दौंगड़ा अहीर शिक्षा के क्षेत्र में लगातार नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। विद्यालय प्रबंधन ने विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में भी विद्यार्थी इसी प्रकार सफलता प्राप्त कर विद्यालय और देश का नाम रोशन करेंगे। इस अवसर पर चेयरमैन धर्मेंद्र यादव, उप चेयरमैन विजय सिंह यादव, निदेशक केसी यादव, उप-प्राचार्य वीर सिंह यादव व सेवानिवृत्त प्राचार्य विरेन्द्र सिंह ने सभी बच्चों को पारितोषिक भेट कर शुभाशीष दिया। समस्त शिक्षक एवं स्टाफ ने सफल विद्यार्थियों का अभिनंदन किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नीट में सफलता से लम्बोरिया एकेडमी का बढ़ा मान

नांगल चौधरी। लंबोरा एकेडमी बुढ़वाल की मेधावी छात्रा अंशु कुमारी ने राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करके विद्यालय व क्षेत्र का नाम रोशन किया है। मेधावी छात्रा को सम्मानित करने के लिए विद्यालय की प्रबंधन कमेटी ने समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया। कमेटी ने छात्रा की उपलब्धि को निरंतर मेहनत, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और सुनियोजित मार्गदर्शन का परिणाम बताया। चेयरमैन हजारीलाल लंबोरा ने बताया कि एकेडमी में 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के बीच नीट व आईआईटी जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति विशेष रुचि रहती है। विद्यार्थियों की जरूरत को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में नियमित शैक्षणिक पढ़ाई के साथ-साथ नीट की विशेष तैयारी भी कराई जाती है।

एसडी स्कूल की पहल: 5000 पौधे लगाने के लक्ष्य का आगाज

- पर्यावरण संरक्षण के लिए एसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल ककराला का सराहनीय कदम

कनीना। शुभारंभ करते एनएनएस के वालंटियर। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल ककराला की एनएसएस इकाई ने वृहद वन महोत्सव अभियान शुरू किया है। 25 जुलाई तक चलने वाले इस अभियान के तहत विद्यालय ने 5000 पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।अभियान के माध्यम से एक पेड़ मां के नाम का संदेश भी दिया जा रहा है। इसके तहत विद्यार्थियों, शिक्षकों और ग्रामीणों को अपनी मां के सम्मान में पौधा लगाकर उसकी देखभाल करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। विद्यालय चेयरमैन जगदेव यादव ने कहा कि पेड़ जीवन का आधार हैं और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पौधरोपण करना चाहिए। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी धनराज और देवव्रत ने बताया कि अभियान तीन चरणों में पूरा किया जाएगा। पहले चरण में स्वयंसेवक जागरूकता अभियान चलाएंगे, दूसरे चरण में विद्यार्थी व शिक्षक पौधरोपण करेंगे और तीसरे चरण में विद्यालय स्टाफ की भागीदारी रहेगी।

दी कनीना बहुद्देशीय प्राथमिक कृषि सहकारी समिति लि. कनीना जिला महेन्द्रगढ़ की प्रबन्धक कमेटी के चुनाव हेतु चुनाव कार्यक्रम

क्र.सं.	विवरण	तिथि	समय	स्थान
1.	नियम 2 के उप नियम 35 के अन्तर्गत मतदाता सूचियों की प्रदर्शनी	21.07.2026 से 23.07.2026	10.00 बजे पूर्वाह्न से 5.00 बजे सायं	1. दी कनीना बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि सहकारी समिति लि., कनीना 2. कार्यालय सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां महेन्द्रगढ़ 3. दी महेन्द्रगढ़ केन्द्रीय सहकारी बैंक लि. (मुख्यालय) महेन्द्रगढ़ 4. दी महेन्द्रगढ़ केन्द्रीय सहकारी बैंक लि. शाखा कनीना
2.	नियम में 4 के उप नियम 35 में वर्णित मतदाताओं की सूची में उठाई गई आपत्तियों की सुनवाई	24.07.2026	10.00 बजे पूर्वाह्न से 2:00 बजे अपराह्न	कार्यालय सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां, महेन्द्रगढ़ कमरा नं. 210, प्रथम तल, लघु सचिवालय, महेन्द्रगढ़
3.	नामांकन पत्र दाखिल करना	07.08.2026	10.00 बजे पूर्वाह्न से 02.00 बजे अपराह्न	कार्यालय सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां, महेन्द्रगढ़ कमरा नं. 210, प्रथम तल, लघु सचिवालय, महेन्द्रगढ़
4.	नामांकन पत्रों की जांच	10.08.2026	10.00 बजे पूर्वाह्न से 02.00 बजे अपराह्न	कार्यालय सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां, महेन्द्रगढ़ कमरा नं. 210, प्रथम तल, लघु सचिवालय, महेन्द्रगढ़
5.	सही पाए गए नामांकन का प्रदर्शन	10.08.2026	सायं 04:00	कार्यालय सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां, महेन्द्रगढ़ कमरा नं. 210, प्रथम तल, लघु सचिवालय, महेन्द्रगढ़
6.	नामांकन पत्रों की वापसी	13.08.2026	10.00 बजे पूर्वाह्न से 02.00 बजे अपराह्न	कार्यालय सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां, महेन्द्रगढ़ कमरा नं. 210, प्रथम तल, लघु सचिवालय, महेन्द्रगढ़
7.	चुनाव चिन्ह देना व उम्मीदवारों सूची का प्रदर्शन	13.08.2026	04.00 बजे सायं	कार्यालय सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां, महेन्द्रगढ़ कमरा नं. 210, प्रथम तल, लघु सचिवालय, महेन्द्रगढ़
8.	चुनाव यदि आवश्यक हुआ	20.08.2026	08.00 बजे पूर्वाह्न से 04.00 बजे सायं	नीचे दर्शाये गये कार्यक्रम अनुसार

मतदान केंद्र	चुनाव स्थान	गाँव जिसके सदस्यों के मत डाले जाएंगे	मत पत्र संख्या	कुल मतदाता
1	लाला रामनिवास धर्मशाला ककराला रोड कनीना	कनीना	01 to 1256	1256
2	गोविंदी बाई धर्मशाला नजदीक पुरानी अनाज मंडी कनीना	करीरा, कपूरी, कोटिया व भड़फ	1257-2663	1407
3	दी कनीना बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि सहकारी समिति लि० कनीना का बिक्री केंद्र ककराला (गांव ककराला)	रामबास, इसराना व ककराला	2664 to 3949	1286
4	दी कनीना बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि सहकारी समिति लि० कनीना का बिक्री केंद्र सिहोर (गांव सिहोर)	सिहोर, छितरौली, गाहड़ा व झाड़ली	3950 to 4967	1018

नोट:-
1. अनुसूचित जाति से सम्बंधित कम से कम एक सदस्य तथा दो महिला सदस्य विहीत रीति में निर्वाचन के माध्यम से सोसायटी की समिति में प्रतिनिधित्व करेगा/ करेगी।
2. पिछड़ी जाति से संबंधित कम से कम एक सदस्य यदि उनकी संख्या एम० पैक्स की कुल सदस्यता के दस प्रतिशत या इससे अधिक है तो विहीत रीति में निर्वाचन के माध्यम से एम० पैक्स की समिति में प्रतिनिधित्व करेगा।
3. कुल 10 प्रबंधक कमेटी सदस्य निर्वाचित होंगे जिनमें कृषक सदस्य अधिकतम 7 तथा गैर कृषक सदस्य अधिकतम 3 होंगे।
4. मतदान के समय सभी मतदाता अपना पहचान पत्र प्रस्तुत करें।

हस्ता/- (सुधीर), निर्वाचन अधिकारी
सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियाँ महेंद्रगढ़

पेयजल की बर्बादी और दुरुपयोग करने वालों पर होगी कार्रवाई

बास खुड़ाना में काटे 13 अवैध पेयजल कनेक्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

ग्राम जल एवं सीवरेज समिति, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग तथा जल एवं स्वच्छता सहायक संगठन की टीम ने विशेष जल संरक्षण अभियान के तहत गांव बास खुडना में डोर-टू-डोर जागरूकता अभियान चलाया। पेयजल की बर्बादी रोकने तथा अवैध कनेक्शनों पर कार्रवाई करने के उद्देश्य से विभाग के सहयोग से ग्राम पंचायतों ने सख्त कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। इसी क्रम में ग्राम पंचायत बास खुड़ाना के सरपंच रत्नलाल, जूनियर इंजीनियर सोमबीर तथा बीआरसी अनीता भाटी के नेतृत्व में अभियान चलाकर 13 अवैध पेयजल कनेक्शन काटे गए। साथ ही अन्य उपभोक्ताओं को वर्षा जल संचयन (रेन वाटर हार्वेस्टिंग), जल संरक्षण तथा पेयजल के जिम्मेदार उपयोग के प्रति जागरूक किया गया।

नारनौल। अवैध कनेक्शन काटती विभागीय टीम।

ग्राम सरपंच रत्नलाल ने बताया कि गांव में पेयजल आपूर्ति संबंधी शिकायतें लगातार प्राप्त हो रही थी। विभाग के पास पर्याप्त मात्रा में पेयजल उपलब्ध होने के बावजूद कई क्षेत्रों तक पानी नहीं पहुंच पा रहा था। विभाग के सहयोग से चलाए गए इस अभियान के दौरान पेयजल का दुरुपयोग करने, खेती में पेयजल का प्रयोग करने तथा नलों पर टोंटी या वाल्व न लगाने वाले और मैन पाइप लाइन में अवैध रूप से लिए कनेक्शन उपभोक्ताओं के विरुद्ध कार्रवाई की गई। जेई सोमबीर तथा बीआरसी अनीता के नेतृत्व में निगरानी टीम का गठन किया गया। जूनियर इंजीनियर सोमबीर ने कहा कि भविष्य में यदि कोई उपभोक्ता पेयजल की बर्बादी करता पाया गया तो उसके विरुद्ध विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

जल संरक्षण के साथ जल गुणवत्ता पर भी दें विशेष ध्यान

जिला सलाहकार मंगतुराम सरसवा ने कहा कि जिले की 343 ग्राम पंचायतों में जल जीवन मिशन के तहत ग्राम जल एवं सीवरेज समितियां कार्यरत हैं। इसके अलावा जिले के सभी खंडों में विभाग की टीमें पेयजल व्यवस्था के संचालन एवं रखरखाव में निरंतर कार्य कर रही हैं। उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में पानी की मांग बढ़ जाती है, जबकि बरसात के मौसम में जल गुणवत्ता बनाए रखना सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसलिए प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह जल संरक्षण को प्राथमिकता दे, पेयजल की बर्बादी रोके तथा जल स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाए। उन्होंने कहा कि स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल प्राप्त करना प्रत्येक नागरिक का अधिकार है, वहीं इसकी गुणवत्ता बनाए रखना और जल संसाधनों का संरक्षण करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

मेरा शहर
मेरी समस्या

दो बड़े वाहनों का एक साथ निकलना मुश्किल, बनती रहती है जाम की स्थिति

अटेली में अतिक्रमण से बिगड़ी यातायात व्यवस्था, दुर्घटनाओं का खतरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

अटेली में बढ़ते अतिक्रमण ने अब गंभीर रूप ले लिया है। मुख्य बाजार, रेलवे रोड और नारनौल-रेवाड़ी मुख्य मार्ग सहित कई प्रमुख स्थानों पर दुकानदारों द्वारा दुकान के बाहर सामान रखने से सड़कें संकरी हो गई हैं। इसके चलते वाहन चालकों और राहगीरों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है और हर समय दुर्घटना का खतरा बना रहता है। नारनौल-रेवाड़ी मुख्य मार्ग पर अतिक्रमण की स्थिति सबसे ज्यादा चिंताजनक है। यहां दुकानदारों ने सड़क किनारे तक अपना सामान फैला रखा है, जिससे सड़क की उपयोगी चौड़ाई काफी कम हो गई है।

पहले जहां इस मार्ग की चौड़ाई लगभग 100 से 110 फुट तक बताई जाती है, वहीं अब कई स्थानों पर यह घटकर करीब 30 फुट रह गई है। ऐसे में दो बड़े वाहनों का एक साथ निकलना मुश्किल हो जाता है, जिससे अक्सर जाम की स्थिति बनती है और दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है।

मंडी अटेली। रेलवे रोड पर अतिक्रमण के चलते सिकुड़ा हुआ मार्ग। फोटो : हरिभूमि

प्रशासन सख्त रुख अपनाए

अटेली नगर पालिका के सचिव प्रशांत पाराशर ने बताया कि अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ प्रशासन सख्त रुख अपनाए हुए है। पहले भी कई स्थानों से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जा चुकी है और अब नगर पालिका द्वारा अतिक्रमण को चिह्नित किया जा रहा है। उन्होंने विशेष रूप से अपील करते हुए कहा कि अटेली में बन रहे नाले पर किसी प्रकार का अतिक्रमण न किया जाए।

कार्रवाई में समानता नहीं दिखती

अटेली के पूर्व चेयरमैन कमलेश सैनी ने बताया कि अतिक्रमण की बढ़ती समस्या पर चिंता जताते हुए कहा कि इसे निष्पक्ष रूप से रोका जाना चाहिए। उनका कहना है कि कई बार कार्रवाई में समानता नहीं दिखती। इसलिए प्रशासन को सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करते हुए सख्ती से अतिक्रमण हटाना चाहिए, तभी शहर में व्यवस्था बेहतर हो सकेगी।

अतिक्रमण रास्तों को करता है संकरा

विनोद शर्मा ने कहा कि अतिक्रमण केवल रास्तों को ही संकरा नहीं करता, बल्कि पूरे बाजार की व्यवस्था को भी बिगाड़ देता है। दुकानों के बाहर सामान रखने से पैदल चलने वालों को सड़क पर उतरना पड़ता है जिससे खतरा बढ़ जाता है। कई बार छोटे-छोटे कारणों से जाम लग जाता है। यदि सभी दुकानदार अपनी सीमा में रहकर काम करें तो बाजार व्यवस्थित रह सकता है।

आपातकालीन वाहन समय पर नहीं निकल पाते

संदीप जागड़ा ने कहा कि अतिक्रमण की समस्या अब आदत बनती जा रही है, जो भविष्य में और बड़ी परेशानी खड़ी कर सकती है। बाजारों में जगह कम होने के कारण लोग मजबूरी में सड़क का सहारा लेते हैं, लेकिन इससे आमजन को नुकसान उठाना पड़ता है। कई बार एंबुलेंस या आपातकालीन वाहन भी समय पर नहीं निकल पाते, जो चिंता का विषय है।

खबर संक्षेप

नवीन राव के जन्मदिन पर आज होगा रक्तदान

महेंद्रगढ़। भारत विकास परिषद, शाखा महेंद्रगढ़ के सदस्य एवं समाजसेवी नवीन राव के जन्मदिन के उपलक्ष्य में रविवार को श्री गोपाल गोशाला बुचियावली धाम, पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक आयोजित होगा। यह जानकारी भारत विकास परिषद के प्रधान रतनलाल माधोगढ़िया ने दी।

केंद्र सरकार शिक्षा मंत्री का इस्तीफा ले: दलीप

मंडी अटेली। सोनम वांगचुक को धरने से उठाने की बजाए केंद्र सरकार को शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा लेना चाहिए था। यह मांग अटेली मार्केटिंग सोसायटी के पूर्व चेयरमैन एवं कांग्रेस के पूर्व अटेली हल्का अध्यक्ष दिलीप सिंह ने की है। वे कल ही नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठे सोनम वांगचुक से मिलकर अटेली लौटे हैं। इस दौरान पूर्व सांसद डॉ. उदित राज तथा ऑल इंडिया केसीसी के उपाध्यक्ष रमेश यादव भी मौजूद रहे।

वन विभाग ने चलाया सफाई अभियान

नारनौल। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की चेयरपर्सन एवं जिला व सत्र न्यायाधीश डॉ. रितु वाईके बहल के दिशा-निर्देशानुसार तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी के मार्गदर्शन में पंचायत भवन के समीप स्थित पार्किंग स्थल पर सफाई अभियान का आयोजन किया गया। अभियान के दौरान सभी संबंधित विभागों के अधिकारी, कर्मचारी और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया। डीएलएसए सचिव नीलम कुमारी ने 12 सितंबर को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी।

दैनिक रेलयात्री एवं जन कल्याण संघ ने सौंपा ज्ञापन

निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने दिए कई अहम आश्वासन

नारनौल रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं की मांग हुई तेज

शौचालयों की बदहाल स्थिति, सफाई व्यवस्था की कमियां, टूटे हुए डंप यार्ड तथा अन्य यात्री सुविधाओं की कमी से अवगत कराया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

उत्तर पश्चिम रेलवे के जयपुर मंडल के मुख्य वाणिज्य निरीक्षक (सीएमआई) आरके शर्मा के रेलवे स्टेशन निरीक्षण के दौरान दैनिक रेलयात्री एवं जन कल्याण संघ ने यात्रियों की समस्याओं और स्टेशन विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। संघ के पदाधिकारियों ने अधिकारियों को स्टेशन का निरीक्षण कराते हुए शौचालयों की बदहाल स्थिति, सफाई व्यवस्था की कमियां, टूटे हुए डंप यार्ड तथा अन्य यात्री सुविधाओं की कमी से अवगत कराया और विस्तृत ज्ञापन सौंपा।

संघ के अध्यक्ष गणेश शर्मा ने अधिकारियों को प्लेटफॉर्म संख्या-1 के नीमकाथाना साइड स्थित जर्जर कूड़ा डंप यार्ड, बिखरे कचरे, पुरुष शौचालय में पानी निकासी की समस्या तथा सफाई व्यवस्था की वास्तविक स्थिति दिखाई।

उन्होंने सुझाव दिया कि तीनों सफाई कर्मचारियों की ड्यूटी एक साथ लगाने के बजाय दो कर्मचारियों की ड्यूटी सुबह और एक कर्मचारी की ड्यूटी शाम के समय लगाई जाए, ताकि पूरे दिन स्टेशन और शौचालयों की नियमित सफाई सुनिश्चित हो सके। उपाध्यक्ष पूनम चंद फौजदार ने कहा कि जिला मुख्यालय होने के बावजूद नारनौल रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को अपेक्षित सुविधाएं नहीं मिल रही हैं।

वहीं सचिव एडवोकेट महावीर जैन ने नारनौल-अटेली-नीमकाथाना रेलमार्ग की लगातार उपेक्षा पर चिंता जताते हुए कहा कि अधिकांश नई ट्रेनें अलवर–बांदीकुई मार्ग पर चलाई जा रही हैं, जबकि इस रेलखंड को नई ट्रेनों से वंचित रखा गया है। उन्होंने इस विषय को उच्च अधिकारियों तक पहुंचाने की मांग की।

नारनौल। रेलवे के अधिकारी को ज्ञापन सौंपते संघ के पदाधिकारी।

जनहित के मुद्दों पर चर्चा की मांग

इस दौरान संघ की ओर से मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम), महाप्रबंधक उत्तर पश्चिम रेलवे तथा वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक (एसआर डीओएम) से जनहित के मुद्दों पर चर्चा के लिए समय उपलब्ध कराने संबंधी पत्र भी अधिकारियों को सौंपे गए। निरीक्षण के दौरान संघ के अध्यक्ष गणेश शर्मा, उपाध्यक्ष पूनम चंद फौजदार, सचिव एडवोकेट महावीर जैन, महासचिव एडवोकेट आशीष चौधरी, हितेंद्र अग्रवाल, मोहनलाल सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे। संघ ने उम्मीद जताई कि अधिकारियों की ओर से दिए गए आश्वासन जल्द धरातल पर उतरेंगे और नारनौल रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं आधुनिक सुविधाएं मिलेंगी।

इन मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

ज्ञापन में प्लेटफॉर्म संख्या-2 पर बड़ा यात्री शेड, सीसीटीवी कैमरे, टिकट एवं आरक्षण व्यवस्था को मजबूत करने, प्लेटफॉर्मों के बीच एंड पाथवे निर्माण, दिव्यांग अनुकूल नए फुट ओवर ब्रिज, पार्किंग व्यवस्था, डंप यार्ड के पुनर्निर्माण और शौचालयों में सुधार सहित कई मांगें शामिल थी। निरीक्षण के दौरान मुख्य वाणिज्य निरीक्षक आरके शर्मा ने जर्जर डंप यार्ड का पुनर्निर्माण कराने, प्लेटफॉर्म संख्या-1 एवं 2 के बीच एंड पाथवे का निर्माण कराने तथा नीमकाथाना साइड पर रैंप सहित नया दिव्यांग अनुकूल फुट ओवर ब्रिज बनवाने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि निरीक्षण के दौरान उठाए गए सभी मुद्दों की विस्तृत रिपोर्ट मंडल एवं उच्च रेलवे अधिकारियों को भेजी जाएगी, ताकि आवश्यक स्वीकृतियां लेकर कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा कराया जा सके।

न्यूज डायरी

रामचंद्र स्कूल में कविता, पेंटिंग एवं क्राफ्ट प्रतियोगिता

कनीना। रामचंद्र पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से कक्षा तीसरी से पांचवीं तक के विद्यार्थियों के लिए कविता वाचन प्रतियोगिता तथा कक्षा छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए पेंटिंग एवं क्राफ्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कविता वाचन प्रतियोगिता में बच्चों ने देशभक्ति, प्रकृति, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक विषयों पर प्रभावशाली प्रस्तुतियां दीं(चेयरमैन रोशनलाल यादव कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताए बच्चों के व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास और रचनात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं। गतिविधि प्रभारी अनीता, शैक्षणिक निदेशक शिवचरण शर्मा तथा समन्वयक ऋतु यादव ने सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

श्रीकृष्ण स्कूल में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

नारनौल। श्रीकृष्ण सीनियर सेकेण्डरी स्कूल भुंगारका में शनिवार को प्रातःकालीन सभा के दौरान मेधावी विद्यार्थियों के सम्मान में समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में नीट परीक्षा में चयनित दीपेन्द्र पुत्र जगराम, रीतिका पुत्री मनीराम, कुमकुम पुत्र संदीप व नीलम पुत्री पृथ्वी सिंह व सीए फाउंडेशन परीक्षा में गौरव पुत्र संजय गुप्ता व सीयूईटी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर छात्रा कीर्ति पुत्री अनिल कुमार, नीकिता पुत्री हवासिंह, हिमेश कुमार पुत्र कृष्ण कुमार, साक्षी पुत्री हवासिंह व निधि पुत्री रघुवीर सिंह को प्रशस्ति-पत्र एवं नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्राचार्य वेदपाल यादव ने कहा कि विद्यार्थियों की यह उपलब्धि विद्यालय, अभिभावकों एवं क्षेत्र के लिए गर्व का विषय है। चेयरमैन एडवोकेट राजपाल यादव ने कहा कि ज्ञान ही जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है।

पौधरोपण व पौधा दान अभियान चलाया

नारनौल। पर्यावरण संरक्षण एवं हरित भारत के संकल्प को साकार करने की दिशा में आर्यव्रत सेवा न्यास की ओर से एक भव्य पौधा दान एवं पौधरोपण अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान के अंतर्गत न्यास द्वारा हजारों पौधे स्थानीय नागरिकों को निःशुल्क वितरित किए गए। बड़ी संख्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक पौधों को अपनाकर उनकी देखभाल एवं संरक्षण का संकल्प लिया। इस अवसर पर आर्यव्रत सेवा न्यास के संस्थापक विनीत पिलानिया के बेटे मृत्युंजय सिंह पिलानिया ने स्वयं नागरिकों को पौधे भेंट किए तथा सभी से प्रत्येक पौधे को एक परिवार के सदस्य की तरह संरक्षित करने का आह्वान किया। इस मौके पर प्रद्युम चहल, विपिन पिलानिया, सचिन बापडोली, कुलदीप झासवा, सुनील चौधरी, प्रवेश कौशिक, विकास सैनी, दीपेश यादव, नागेंद्र, अनिल यादव, राकेश यादव, पुरुषोत्तम तथा प्रदीप गुर्जर सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बीआर स्कूल में गणित क्विज प्रतियोगिता

महेंद्रगढ़। बीआर ज्ञानदीप स्कूल सुरजनवास में कक्षा चौथी एवं पांचवीं के विद्यार्थियों के लिए गणित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि विकसित करना, तार्किक क्षमता बढ़ाना तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रोत्साहित करना था। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह, आत्मविश्वास और टीम भावना के साथ विभिन्न रोचक एवं ज्ञानवर्धक राउंड में भाग लिया। प्रतियोगिता में टीम डी ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस टीम के सदस्य विरोचन, वीरेन, अंश एवं सार्थक रहे। वहीं टीम ए ने सराहनीय प्रदर्शन कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस टीम में भाविका, राव्या, रुहान एवं भाविन शामिल रहे। इस प्रतियोगिता का सफल संचालन कल्पना शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया।

वीएलडीए पर हमले व कार्यस्थल के दबाव के विरोध में कर्मचारियों का प्रदर्शन

नारनौल। करनाल जिले में वैक्सीनेशन के दौरान एक वीएलडीए पर हुए जानलेवा हमले तथा सिरसा जिले में एक वीएलडीए की मौत के मामले को लेकर जिले के वीएलडीए ने शनिवार को आकस्मिक बैठक कर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान विक्रम सिंह ने की। बैठक के बाद उप-निदेशक पशुपालन विभाग महेंद्रगढ़ (नारनौल) के माध्यम से मुख्यमंत्री को मांगपत्र भेजा गया। ज्ञापन में कहा कि करनाल जिले में वैक्सीनेशन के बाद एक बछड़े की मृत्यु होने पर पशु मालिक ने वीएलडीए सुरेंद्र सिंह पर जानलेवा हमला कर दिया। हमले में उन्हें गंभीर चोटें आईं, दोनों हाथ टूट गए, पसलियां क्षतिग्रस्त हो गईं तथा सिर पर भी हथियारों से वार किया गया। वर्तमान में वे आईसीयू में उपचाराधीन हैं। कर्मचारियों ने आरोपियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई करने की मांग की।

जयपुर से सिंघानिया विश्वविद्यालय तक जागरूकता रैली का भव्य स्वागत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

विश्व पैरा थ्रोबॉल फेडरेशन एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में थर्ड एशियन पैरा थ्रोबॉल चैंपियनशिप 2027 के प्रचार-प्रसार एवं जनजागरूकता के उद्देश्य से जयपुर से सिंघानिया विश्वविद्यालय पचेरी बड़ी तक निकाली गई जागरूकता रैली को राजस्थान सरकार के जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, विश्व पैरा थ्रोबॉल फेडरेशन की अध्यक्ष निर्मला रावत तथा सिंघानिया विश्वविद्यालय अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मंत्री सुरेश सिंह रावत ने विश्व पैरा थ्रोबॉल फेडरेशन एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि दिव्यांग खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराना अत्यंत सराहनीय कार्य है। लगभग 40 दिव्यांग पैरा थ्रोबॉल खिलाड़ियों ने बाइक एवं स्कूटी के माध्यम से आयोजित जागरूकता रैली में भाग लिया।

नारनौल। ग्रामीणों को जानकारी देते बीएसएनएल के अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

सुजापुर में बीएसएनएल ने ग्रामीणों को दूरसंचार सेवाओं की दी जानकारी

नारनौल। भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) के रेवाड़ी दूरसंचार क्षेत्र की ओर से अटेली खंड के गांव सुजापुर में विशाल जनसेवा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ग्रामीणों को निगम की नवीन दूरसंचार सेवाओं, ब्रॉडबैंड सुविधा तथा विभिन्न उपभोक्ता योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। इस अवसर पर प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार पूरण चंद ने गांव का दौरा कर मोबाइल तथा फाइबर आधारित इंटरनेट सेवा की स्थिति का निरीक्षण किया। उन्होंने ग्राम सरपंच एवं ग्रामीणों से बातचीत कर दूरसंचार संबंधी समस्याएं सुनी और उनके शीघ्र समाधान का भरोसा दिलाया। शिविर में ग्रामीणों को 259 रुपये प्रतिमाह से शुरू होने वाली फाइबर आधारित ब्रॉडबैंड योजना, नई मोबाइल सिम योजनाओं तथा अन्य विशेष प्रस्तावों की जानकारी दी गई। साथ ही मौके पर ही नई सिम जारी करने, खराब या बंद सिम बदलने, पुरानी तीसरी पीढ़ी की सिम को चौथी पीढ़ी (पांचवीं पीढ़ी के लिए तैयार) सिम में बदलने तथा फाइबर इंटरनेट कनेक्शन के लिए आवेदन करने की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई। प्रधान महाप्रबंधक के निर्देश पर मोबाइल नेटवर्क विशेषज्ञों की टीम ने गांव में नेटवर्क की गुणवत्ता का परीक्षण किया तथा जहां आवश्यकता महसूस हुई, वहां सेवा में सुधार के लिए आवश्यक तकनीकी कार्य भी किए। पूरण चंद ने ग्रामीणों को निगम की व्हाट्सऐप आधारित ग्राहक सेवा और दूरभाष सहायता सेवा के बारे में भी जानकारी दी।

नीट में आरपीएस के 140 विद्यार्थियों ने 500 से अधिक अंक हासिल किए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

एनटीए द्वारा घोषित नीट परीक्षा परिणाम में आरपीएस समूह की काव्या ने 720 में से 680, लता व आर्यन ने 672, प्रिया ने 667, आर्यन ने 665, यश ने 660, अमन ने 658 व अक्षत ने 651 अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। वहीं आरपीएस के यश ने नीट परीक्षा में ऑल इंडिया कैटेगरी रैंक 24, अमन ने 29, अक्षत ने 37, आर्यन ने 48, काव्या ने 83, आर्यन ने 102, लता ने 139 व प्रिया ने 182, राहुल ने 206, आर्यन ने 273, याशिका ने 280, दिव्यांशु ने 398, मयंक ने 419, चिराग ने 602, निशा ने 643, देव ने 646, आयुष ने 842, सार्थक ने 864, विवेक ने 922, दीपिका ने 974, शिखर ने 980वीं रैंक प्राप्त कर आरपीएस के साथ-साथ, पूरे हरियाणा प्रदेश का नाम पूरे देश में रोशन किया है। बच्चों की इस उपलब्धि पर आरपीएस विद्यालय ही नहीं बच्चों के घरों, शहरों व क्षेत्रों में भी जश्न का माहौल रहा।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

नारनौल के ऐतिहासिक आजाद चौक पर 13 घंटे का सांकेतिक उपवास, हस्ताक्षर अभियान चलाकर जताया समर्थन

जंतर-मंतर से सोनम वांगचुक को उठाना संसद सत्र से पहले रचा गया षड्यंत्र : खेड़ा

- धरने के दौरान संयोजक गिरीश खेड़ा और सेवानिवृत्त बीईओ राम अवतार डाडैया ने उपवास रखा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

जंतर-मंतर से सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को हटाना संसद के मानसून सत्र को देखते हुए सरकार द्वारा रचा गया षड्यंत्र है। यह आरोप सामाजिक कार्यकर्ता एवं धरना के संयोजक गिरीश खेड़ा ने शनिवार को शहर के ऐतिहासिक आजाद चौक पर आयोजित अनशन एवं सांकेतिक धरने के दौरान लगाया।

उन्होंने कहा कि सरकार चाहती तो अपने किसी प्रतिनिधि को भेजकर बातचीत के माध्यम से धरना और आमरण अनशन समाप्त करवा सकती थी। सरकार यह आश्वासन भी दे सकती थी कि यदि भविष्य में नीट पेपर लीक जैसी घटना दोबारा होती है तो शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से तत्काल इस्तीफा लिया जाएगा, लेकिन ऐसा करने के बजाय पुलिस बल का प्रयोग कर सोनम वांगचुक और उनके साथियों को अनशन स्थल से उठा लिया गया।

बता दें कि आजाद चौक पर सोनम वांगचुक के आमरण अनशन, त्याग और देशभक्ति के समर्थन में शहर के जागरूक नागरिकों ने सवेरे 13 घंटे का सांकेतिक धरना शुरू किया। धरने के दौरान संयोजक गिरीश खेड़ा और सेवानिवृत्त बीईओ राम अवतार डाडैया ने उपवास रखा। साथ ही आमजन से समर्थन जुटाने के लिए हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने हस्ताक्षर कर अपना समर्थन दर्ज कराया और सरकार के खिलाफ विरोध जताया।

नारनौल। आजाद चौक में वांगचुक के समर्थन में अनशन एवं धरने पर बैठे कार्यकर्ता।

ये रहे मौजूद

संजय सैनी, रिंकू सैनी, विवेक भटनागर, एडवोकेट वीरभान श्योराण, मेनपाल यादव, पूर्व सैनिक करण सिंह, रामदेव, गोविंद सोनी, जोगिंद्र सिंह खन्ना, मनोज डहीनवाल, आत्माराम सैनी, हवा सिंह, विक्रम सिंह व जितेंद्र सहित अनेक नागरिक उपस्थित रहे।

संवाद का रास्ता अपनाने के बजाय दमनात्मक कार्रवाई करना उचित नहीं

गिरीश खेड़ा ने कहा कि सरकार की कार्रवाई से स्पष्ट हो गया है कि वह 20 जुलाई को प्रस्तावित संसद मार्च को किसी भी कीमत पर सफल नहीं होने देना चाहती। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में संवाद का रास्ता अपनाने के बजाय दमनात्मक कार्रवाई करना उचित नहीं है। उन्होंने पेपर लीक के मुद्दे पर भी सरकार को घेरते हुए कहा कि यदि किसी स्कूल बस चालक की लापरवाही से दुर्घटना होती है तो चालक के साथ-साथ स्कूल प्रबंधन तक को जिम्मेदार ठहराया जाता है। इस दौरान डॉ. राजवती यादव, कामरेड छाजूराम रावत, धीरज शर्मा, श्याम सुंदर सोनी, एडवोकेट मनजीत सिंह, डॉ. व्रतपाल सिंह व जयसिंह सैनी ने भी संबोधित किया।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 19 जुलाई 2026

एक समय तक रोजमर्रा की आपा-धापी, दुख और तनाव को दूर करने के लिए लाफ्टर क्लब्स को कारगर माना जाता था। लेकिन हाल के वर्षों में दुख-अवसाद से राहत दिलाने में क्रायिंग क्लब को ज्यादा कारगर माना जाने लगा है। इसीलिए विदेशों में ही नहीं अपने देश में भी इसका ट्रेंड बढ़ रहा है। ये क्रायिंग क्लब कैसे दुखों से राहत दिलाते हैं, यहां बता रहे हैं विस्तार से।

क्रायिंग क्लबों का बढ़ता ट्रेंड
मिलकर रोने से-दु:ख हो जाए कम

{ **कवर स्टोरी** / **शाहिद ए. चौधरी** }

एक दिन सुबह चहलकदमी करने के दौरान मैंने पार्क के एक कोने में कुछ बुजुर्गों को एक सुर में जोर-जोर से हंसते हुए देखा। अपने-अपने दुःखों को दूर करने, डिप्रेशन से बचे रहने और अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का उनका यह तरीका है। बीते कई वर्षों से दुनिया भर में हंसी को सबसे अच्छी दवा मानकर उसे अपनाने का ट्रेंड काफी पॉपुलर हो चुका है। यह देखकर अच्छा लगा। लेकिन संयोग रहा कि जब पार्क से घर लौटा तो दुःखद समाचार मिला कि पड़ोस में रहने वाले एक व्यक्ति की दिल का दौरा पड़ने से डेथ हो गई। मैं शोक व्यक्त करने के लिए उनके घर पहुंचा तो देखा कि गुमसुम बैठी मृतक की पत्नी को अनेक महिलाएं रुलाने का प्रयास कर रही हैं और उनमें से एक को मैंने यह कहते हुए सुना, 'अरे, इन्हें रुला दो, कुछ तो गम गलत होगा, वर्ना सदमे की वजह से डिप्रेशन में चली जाएंगी।' इन दोनों घटनाओं से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मनुष्य के लिए हंसने और रोने दोनों का बहुत अधिक महत्व है। वैसे भी कुदरत ने ये दोनों गुण इंसानों को ही दिए हैं। चोट लगने पर जानवर चिल्लाते अवश्य हैं, लेकिन इंसानों की तरह रोते नहीं हैं।

रोने के लिए बन रहे क्लब

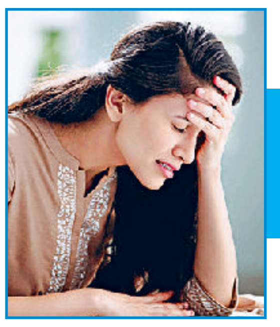

आमतौर पर रोने को कमजोरी की निशानी मान लिया जाता है। शायद तभी सुदर्शन फाकिर ने अपने एक शेर में कहा है, 'आप कहते थे कि रोने से न बदलेंगे नसीब/उम्र भर आपकी इस बात ने रोने न दिया।' यह कहा भी भले ही जाता हो कि मर्द को दर्द नहीं होता या मर्द रोते नहीं हैं। लेकिन आज दुनिया भर के डॉक्टर्स इस बात को स्वीकार करते हैं कि रोने से मन हल्का होता है और कुछ लोगों के साथ मिलकर रोने से दुःख से राहत महसूस होती है। इसलिए देश के कई शहरों में क्रायिंग क्लब खुल रहे हैं। देश-समाज का यह नवीनतम सामूहिक संस्कार है, जिसमें हंसी की जगह आंसुओं ने ले ली है। इनमें व्यक्ति उस समय तक रो सकता है, जब तक उसके दिल का बोझ हल्का न हो जाए और वह जिंदगी की नई शुरुआत करने के लिए तैयार न हो जाए।

काफी लोग हो रहे शामिल

क्रायिंग क्लब, दशकों पुराने लाफ्टर क्लबों का जवाब-सा प्रतीत हो रहे हैं। मुंबई, दिल्ली, बैंग्लुरु और हैदराबाद में लोग कॉफी शॉप्स, पब्स में आयोजित होने वाले क्रायिंग सेशन में शामिल हो रहे हैं। सूरत में तो 'हेल्दी क्रायिंग क्लब' को चलते हुए अब आठ वर्ष हो गए हैं, जिसके सदस्य हर माह के अंतिम रविवार को एकत्र होते हैं और जी भरकर रोते हैं।

ऐसे हुई क्रायिंग क्लब की शुरुआत

सबसे पहले टोक्यो (जापान) के हिरोकी तेराई ने ग्रुप थेरेपी के तौर पर वर्ष 2013 में रुइ कत्सू (आंसू बहाना) आरंभ किया। पहले तेराई, तलाक समारोह आयोजित करने के लिए विख्यात थे, जिसमें पूर्व जोड़े अपनी शादी की अंगूठी पर हथोड़े मारते थे ताकि अपने अतीत के बोझ से मुक्त हो सकें। तेराई ने बाद में आक्रामकता को खत्म करते हुए इसका एक कोमल रूप विकसित किया, जिसमें हल्की रोशनी में भावनात्मक फिल्में देखी जाती हैं। आपसी सहमति से एक-दूसरे को खाना खिलाते हैं और क्रायिंग सेशन में लोग हिस्सा लेते हैं। अपने देश में 'स्मॉल वर्ल्ड' (डिजिटल से इतर रियल सोशल कनेक्शन को प्रमोट करने वाली संस्था) के संस्थापक सौरव आर्य ने क्रायिंग क्लब लांच किया। इसे शुरू करने के पीछे उनका तर्क यह था कि 'ऑनलाइन दोस्तों से घिरे रहने के बावजूद लोग अकेलापन महसूस कर रहे हैं।' इस क्लब के सत्र प्राइवेट कैफे व पब्स में आयोजित किए जाते हैं, जिनमें दोस्त के लिविंग रूम जैसा एहसास होता है। सेशन में सभी को बोलना जरूरी नहीं होता। बहुत से लोग दूसरों को सिर्फ सुनते हैं। सुनते हुए ही उसके दर्द को सुनकर या अपना दर्द यादकर वे रोने लगते हैं। सत्र में पुरुष और महिलाएं सभी भाग लेते हैं। आमतौर पर इसमें 20-40 वर्ष के लोग आते हैं।

रोने की विभिन्न वजहें

अमेरिका में रहने वाले 45 वर्षीय रमेश, मुंबई लौटे थे। वह ग्रुप एक्टिविटी की तलाश करते हुए एक ऐसी जगह पहुंच गए, जिसकी उन्हें उम्मीद भी न थी। एक क्रायिंग क्लब, जिसका आयोजन मुंबई के एक बार में हो रहा था, जो उन्हें दिलचस्प लगा, विशेषकर इसलिए कि उन्हें भी अपनी कुछ भावनाओं से मुक्ति पानी थी। रमेश को वह जगह नकारात्मक भावना दूर करने से अधिक संपर्क स्थापित करने वाली अधिक लगी, क्योंकि उनकी वहां ऐसे लोगों से बॉन्डिंग बनी, जो अपनी नकारात्मक भावनाओं से जूझ रहे थे। सच यही है कि ऐसे क्लबों में आने वाले लोगों के रोने के विविध कारण हो सकते हैं- ब्रेकअप, जीवन में अनपेक्षित परिवर्तन या नुकसान। अनाम थकान जिसे शब्दों में व्यक्त न किया जा सके। एक लड़की तो रोने के लिए केवल इसलिए क्रायिंग क्लब में पहुंची कि उसने पांच दिन से किसी से बात ही नहीं की थी। उसे अपने गुमनाम होने का एहसास हो रहा था। उसने सत्र में दो नए दोस्त बनाए। सत्र में शामिल होने की एक व्यक्ति ने यह वजह बताई, 'मुझे राहत नहीं चाहिए। मुझे तो बस वह जगह चाहिए, जहां मेरी उदासी को बरकरार रहने का अवसर मिले।'

सच यह है कि अलग-अलग स्थानों और परिवेश के लोग अलग-अलग तरह से रोते हैं। महानगरों में लोग बर्नआउट और अकेलेपन की वजह से रोते हैं। छोटे शहरों में रहने वाले लोग अकसर पारिवारिक या सामाजिक दबाव के कारण रोते हैं। ऐसे क्लबों में एक बार जब रोना बंद हो जाता है, तो आपसी समानुभूति का संपर्क स्थापित होना शुरू हो जाता है। लोग नए संपर्क और मुस्कान लेकर लौटते हैं। *

लाफ्टर मैन से बने क्रायिंग मैन

लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने कमलेश मसाला वाला को 'पहला लाफ्टर टीचर' घोषित किया था। तकरीबन आठ साल पहले उन्होंने तय किया कि लोगों को 25 साल तक बहुत हंसा लिया, अब उन्हें रुलाया जाए और उन्होंने 'हेल्दी क्रायिंग क्लब' की स्थापना सबसे पहले गुजरात के सूरत में की। गौरतलब है कि 2008 में मसाला वाला ने इंटरनेशनल लाफ्टर योग कांफ्रेंस के दौरान अविरल रोने की प्रतियोगिता जीती थी। उन्होंने अपनी दिवंगत माता को याद करके एकदम से रोना शुरू कर दिया था। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि भावनात्मक आंसुओं में भी मेडिकल लाभ होते हैं। अब तो कई स्टडीज में सामने आया है कि जब हम दुःख, तनाव या कुंठा की वजह से रोते हैं तो हमारा शरीर कोर्टिसोल स्ट्रेस हॉर्मोन उत्पन्न करता है। हंसने से जो आंसू निकलते हैं, उनमें यह हार्मोन नहीं होता है। यानी सुकून महसूस करने के लिए हंसी के साथ आंसू भी जरूरी हैं।

भूटान, ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन (जीसीडी) पर हस्ताक्षर करने वाला पहला देश बना है। क्या है यह डिक्लेरेशन और किस तरह समाज की चुनौतियों से निपटने में यह सहायक हो सकता है? इसके साथ ही कुछ ज्वलंत सवालों पर नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने साझा किए अपने विचार।

दूसरे की तकलीफ को अपनी पीड़ा की तरह महसूस करने से जन्मती है करुणा की शक्ति

{ **विशिष्ट अभिव्यक्ति/ कैलाश सत्यार्थी** }

हाल ही में हमारे पड़ोसी देश भूटान ने ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन (जीसीडी) पर हस्ताक्षर किया है। ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन, एक महत्वपूर्ण, अनूठा दस्तावेज है। पिछले साल सितंबर में संयुक्त राष्ट्र संघ के महाधिवेशन में सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कंपैशन ने मोनाको देश की सहभागिता में एक विशेष बैठक आयोजित किया, जो करुणा के वैश्वीकरण से शासन तंत्र को करुणामय बनाने के विचार से आयोजित किया गया था। उस उच्च स्तरीय बैठक में राष्ट्राध्यक्ष, संयुक्त राष्ट्र संघ के वरिष्ठ अधिकारी, नोबेल पुरस्कार विजेता और मानवाधिकार कार्यकर्ता शामिल हुए थे। इसमें संवाद के बाद जो सहमति बनी, वह एक घोषणापत्र के रूप में सामने आई, जिसमें सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने करुणा की हमारी बदली परिभाषा को स्वीकार किया। सामान्य तौर पर करुणा को एक नाजुक भाव मान लिया जाता है। हमारी परिभाषा में करुणा वह शक्ति है, जो दूसरे की तकलीफ को अपनी पीड़ा की तरह महसूस करने से जन्मती है और उसके समाधान की प्रेरणा शक्ति बनती है। इसी के आधार पर समाज के हर क्षेत्र में विवेकपूर्ण समाधान की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए यह घोषणापत्र तैयार हुआ। भूटान पहला देश है, जिसने इसे अनुमोदित किया और वहां के प्रधानमंत्री ने इस पर हस्ताक्षर किया। बाद में एक अन्य छोटे से देश तिमोर लेस्ते ने भी हस्ताक्षर किया।

विकसित करना होगा करुणामय नेतृत्व: आज जब समाधानकर्ताओं और पीड़ितों के बीच खाई चौड़ी होती चली जा रही है, तब यह आवश्यक है कि शासन व्यवस्था, शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, मीडिया आदि में करुणामय नेतृत्व विकसित किया जाए। इसका अर्थ यह हुआ कि इन सभी संस्थाओं या क्षेत्रों में लोग दूसरे की समस्याओं को अपना समझकर उसके निपटान के लिए नेतृत्व करें। यह काम लगातार व्यावहारिक प्रशिक्षण संवाद और अनुभवजनित ज्ञान जैसे प्रयोगों से संभव है। ऐसे कुछ वैज्ञानिक शोध हुए हैं, जिनसे साबित हुआ है कि अस्पतालों में चिकित्साकर्मियों के करुणाजनित व्यवहार के परिणामस्वरूप मरीजों का जल्दी और प्रभावशाली उपचार हो सका। इसी तरह कॉरपोरेट जगत में करुणामय नेतृत्व के कारण प्रबंधन में परस्पर विश्वास और सक्रिय भागीदारी, कर्मचारियों में संतोष, उत्साह और कंपनियों में उत्पादन-मुनाफा बढ़ गया।

युद्ध का खामियाजा भुगतते हैं बच्चे: यह पूरी मानवता के लिए बेहद चिंताजनक तथ्य है कि आज दुनिया में लगभग 47 करोड़ बच्चे युद्धग्रस्त क्षेत्रों में रहने को विवश हैं। हम सबको यह समझना जरूरी है कि इतिहास में बच्चे कभी युद्ध का कारण नहीं रहे। न ही कभी वे युद्ध लड़ते हैं। परंतु युद्ध का सबसे ज्यादा खामियाजा उन्हीं को भुगतना पड़ता है। परिवार से बिछड़ना, पढ़ाई छूट जाना, मनोवैज्ञानिक और मानसिक आघात जैसे स्थाई घाव उनके पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं। दुर्भाग्य है कि वे हमारी राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय प्राथमिकता नहीं हैं। यदि वैश्विक नेताओं, नेतृत्वकर्ताओं ने अपनी जिम्मेदारी को ठीक से समझा होता तो दुनिया भर में इतने बच्चे असमय मौत के मुंह में न समाते।

आवश्यक है करुणामय शिक्षा प्रणाली: जब तक शिक्षा का उद्देश्य खुद की और देशों की आर्थिक तरक्की मात्र रहेगा, तब तक नागरिक स्वार्थी और आत्मकेंद्रित बनते रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि पाठ्यक्रम और शिक्षा नीतियों के माध्यम से बच्चों में एक-दूसरे के प्रति नैतिक जवाबदेही का भाव सिखाया जाए, जिसे हम करुणामय शिक्षा प्रणाली कहते हैं।

तभी होगा वैश्विक चुनौतियों का समाधान: आज दुनिया के सामने मौजूद प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी तमाम वैश्विक चुनौतियों के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं। सबसे बड़ा कारण कथनी और करनी का अंतर है। उपभोक्तावाद, औद्योगीकरण और मुनाफा पर आधारित जीवनशैली, पृथ्वी और पर्यावरण के विनाश का बड़ा कारण है। दूसरा कारण, इस दिशा में राजनैतिक इच्छा शक्ति का अभाव है। तीसरा, पर्यावरण विनाश और संरक्षण एकदेशीय नहीं हो सकता। यह धरती पर रहने वाले सभी लोगों को प्रभावित करता है। कम आबादी वाले अमीर देश, ज्यादा आबादी वाले गरीब देशों से कहीं अधिक कार्बन उत्सर्जन करते हैं। इसलिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जवाबदेही तय होनी चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए मिसाल है भूटान: भूटान ने ऐसे कई प्रयोग किए हैं, जो पर्यावरण, मानवता और संस्कृति की रक्षा के लिए जाने जाते हैं। इसमें ग्रॉस हैप्पीनेस इंडेक्स भी शामिल है। खुशी के इस पैमाने को दूसरे कई देश भी मानते हैं। साथ ही भूटान के संविधान में यह प्रावधान है कि देश का सत्तर प्रतिशत जमीन वन क्षेत्र रहेगा, जिससे जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन बना रहे। वहां के महाराज, जिग्मे खेसर नामग्येल वांगचुक और राजकुमारी सोनम जी सहित राजपरिवार, देश के मुख्य न्यायाधीश और अनेक राजनेताओं के साथ करुणामय समाज बनाने पर ठोस सहमति बनी, जिसे हम मिलकर लागू करने का समयबद्ध कार्यक्रम बना रहे हैं। *

प्रस्तुति: सरस्वती रमेश

{ **लघुकथाएं** }

यादों का बैंक

COUNTER
BANK

शहर में एक नया बैंक खुला-यादों का बैंक। यहां लोग पैसे नहीं, अपनी यादें जमा करते थे। खुशियों की यादों पर अच्छा ब्याज मिलता था, जबकि दुखद यादें हटाने के लिए लोग फीस देते थे।

एक दिन पचपन वर्षीय अजित वहां पहुंचा। उसने अपनी सबसे प्रिय याद जमा करने का फॉर्म भरा। कर्मचारी ने पूछा, 'कौन-सी याद है?'

अजित मुस्कुराया, 'वह दिन, जब मेरा पांच साल का बेटा पहली बार साइकिल चलाते हुए गिर पड़ा था। रोते-रोते फिर उठा और बोला-पापा, मैं हारूंगा नहीं।'

बैंक कर्मचारी चौंका, 'इतनी प्यारी याद क्यों जमा करना चाहते हैं? इस पर तो आपको अच्छा लाभ मिलेगा।'

अजित ने धीमे स्वर में कहा, 'इसलिए क्योंकि मेरा बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। उसकी याद हर दिन मुझे रुलाती है।'

याद बैंक की मशीन ने अजीत की उस स्मृति को उसके मन से निकाल कर जमा कर लिया। अजित हल्का महसूस करने लगा।

कुछ महीने बाद वह फिर बैंक पहुंचा। इस बार उसके चेहरे पर बेचैनी थी, 'मुझे अपनी जमा की हुई याद वापस चाहिए।' उसने बैंक कर्मी से कहा।

'लेकिन क्यों? आपने तो दर्द से छुटकारा पाने के लिए उसे जमा किया था!' अजित की आंखें भर आईं। वह बोला, 'दर्द चला गया, पर उसके साथ मेरा बेटा भी चला गया। अब मैं रोता नहीं, लेकिन मुस्कुरा भी नहीं पाता। समझ में आया कि कुछ दुख बोझ नहीं होते, वे हमारे अपनों के आखिरी निशान होते हैं।'

बैंक कर्मी ने उसकी याद लौटा दी। बैंक से बाहर निकलते समय अजित की आंखों में आंसू थे, पर होंठों पर मुस्कान भी। उसे पहली बार लगा कि हर घाव भर जाना जरूरी नहीं, कुछ घाव ही हमें इंसान बनाए रखते हैं। *

-कृति आरके जैन

श्रम का संगीत

पत्नी खर्राटे ले रही थी। पति की नींद खर्राटे की आवाज से टूट गई थी।

यह पहली ही बार था, जब पति को पत्नी के खर्राटे सुनने का अवसर मिला था। रोज तो पत्नी ही पति के खर्राटे की वजह से नींद टूटने की शिकायत किया करती थी, आज पति को यह मौका मिल गया था!

बस सुबह होने की प्रतीक्षा थी।

पति फिर से सोने की कोशिश करने लगा। आंखें मूंदते ही पत्नी की दिनचर्या उसकी आंखों के आगे आ गई, सुबह-सुबह उठना, बच्चों को तैयार करना, नाश्ता कराना, स्कूल बस तक छोड़ना। आकर पति को जगाना, चाय पिलाना। नाश्ते और लंच की तैयारी में लग जाना। पति के कपड़े निकालकर रखना। उनको नाश्ता कराना। उनका लंच पैक करना। पति के जाने के बाद घर की साफ-सफाई और गंदे कपड़ों को वॉशिंग मशीन में डालना। नहाना-धोना, पूजा-पाठ, नाश्ता करना। बच्चों को स्कूल से लाना। खिलाना-पिलाना, उनको होमवर्क करवाना। शाम में बच्चों को पार्क ले जाना। फिर साग-सब्जी, दूध, फल और जरूरी सामानों की खरीदारी करना। सबके लिए रात का खाना पकाना। पति के आने पर उन्हें चाय-पानी देना। बच्चों को खिलाकर पति के साथ खाने बैठना। थोड़ी देर टीवी पर कोई सीरियल देखना और फिर सो जाना।

'यह खर्राटा तो श्रम का संगीत है!' पता नहीं कहां से पति के मन में यह साहित्यिक भाव आया?

पत्नी के खर्राटे अब उसे संगीतमय लगने लगे। खर्राटों से उसे अब कोई शिकायत नहीं रही। *

- संजीव ठाकुर

{ **पुस्तक चर्चा** / **विज्ञान भूषण** }

संवेदना से भरी कहानियां

चयनित कहानियाँ
गोविंद सेन

चार दशक से अधिक समय से कहानी लेखन में सक्रिय वरिष्ठ लेखक गोविंद सेन की चयनित कहानियों का संकलन कुछ समय पूर्व प्रकाशित होकर आया है। इसमें उनकी अठारह कहानियां संकलित हैं।

ये कहानियां जीवन की विडंबनाओं और रिश्तों की पेचीदगियों को उजागर करने के साथ ही हमारी संवेदनाओं को झकझोरती भी हैं। मिसाल के तौर पर 'स्पीड ब्रेकर' कहानी मानवीय मनोवृत्ति को सामने लाती है, जिसमें पढ़े-लिखे व्यक्ति के मन में सहज तौर पर हीनभावना जन्म लेती है, जब उसे अपने से कम शिक्षित व्यक्ति, आर्थिक रूप से अधिक संपन्न दिखता है।

गरीब तबके के लोगों का जीवन, किस तरह छोटी-छोटी चीजों से भी वंचित रहने का दंश सहता रहता है, इसका मार्मिक वर्णन 'गुमशुदा चांद की वापसी' में किया गया है। संग्रह की एक छोटी सी कहानी 'दाढ़ी' में बहुत सरलता से सामाजिक विषमता की दुखती रग पर अंगुली रखी गई है।

संग्रह की लगभग सभी कहानियां पठनीयता से भरपूर हैं। इन कहानियों में न तो किसी वाद का झंडा उठाया गया है, न ही किसी विमर्श को लेकर हाय-तौबा की गई है। जानबूझ कर गढ़े गए शिल्प और भाषायी कलाबाजियों से मुक्त ये कहानियां बहुत सरल और सहज तरीके से हमारे मन के किसी कोने में हमेशा के लिए दर्ज होने में सक्षम हैं। *

किताब: चयनित कहानियां (कहानी-संग्रह), **लेखक:** गोविंद सेन,
मूल्य: 225 रुपए, **प्रकाशक:** न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

दुबलेपन की जड़ पर करें वार
MUSHROOMEX®
MUSHROOM WEIGHT GAIN AYURVEDIC POWDER
शरीर की 3 ज़रूरी ज़रूरतों में सहायक
भूख को बेहतर बनाने में
नए ब्लड सेल्स बनाने में
पाचन को मज़बूत बनाने में
12 आयुर्वेदिक जड़ी- बूटियों की ताक़त
ऑयस्टर मशरूम – प्राकृतिक पोषण और दैनिक ऊर्जा का समृद्ध स्रोत
अश्वगंधा – स्टेमिना और रोज़मर्रा की सहनशक्ति के लिए
सफ़ेद मूसली – शरीर की ताकत और वाइटैलिटी को सपोर्ट करें
काली मूसली – ऊर्जा और शारीरिक मज़बूती का साथ
छोटी हरड़ – पाचन शक्ति और पोषण उपयोग का श्रेष्ठ आयुर्वेदिक आधार
MUSHROOMEX MUSHROOM POWDER
2 करोड़+
संतुष्ट ग्राहकों का भरोसा
10 दिनों में फर्क दिखना शुरू*
आपके नज़दीकी सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध !
Also Available at : www.mymushroomworld.com | amazon | Flipkart
Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd.
For Trade Enquiry - +91 888 922 3333

लोक-संस्कृति / शिखर चंद जैन

दुनिया के अनेक देशों की संस्कृतियों में बादल और बारिश को उम्मीद, समृद्धि और जीवन का संदेशवाहक माना जाता है। इसी खुशी को अलग-अलग देशों में अनूठे उत्सवों, लोक-परंपराओं, प्रार्थनाओं, नृत्य और सामुदायिक अनुष्ठानों के जरिए उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। वर्षा ऋतु से जुड़े ऐसे ही कुछ उत्सवों पर एक नजर।

दुनिया भर में मनाते हैं रंग-बिरंगे वर्षा उत्सव

वर्षा प्रार्थना महोत्सव, वियतनाम

मार्च के शुष्क मौसम में वियतनाम के हा जियांग प्रांत में लो लो समुदाय के लोग पारंपरिक नृत्य और प्रार्थना के माध्यम से बादलों से पानी बरसाने की गुहार लगाते हैं। इसमें तांबे के प्राचीन ड्रम बजाना और पुजारी (शमन) द्वारा प्राकृतिक शक्तियों को प्रसन्न करने वाले मंत्रोच्चार शामिल होते हैं, जिसके बाद सामूहिक भोज का आयोजन होता है। वियतनाम का एक अन्य श्वेत थाई अल्पसंख्यक समुदाय जेन, बारिश के आगमन पर फोन महोत्सव मनाता है। यह उत्सव उत्तर-पश्चिमी वियतनाम की माई चाऊ की खूबसूरत घाटी में होता है। इस उत्सव में गांव के लोग पारंपरिक वाद्ययंत्र बजाते हैं, सामूहिक रूप में लोक गीत गाते हैं और अच्छी बारिश की कामना के लिए अनुष्ठान करते हैं। वियतनाम में रहने वाले जराई समुदाय के लोग प्ली ओई नामक वर्षा प्रार्थना उत्सव, किसी राष्ट्रीय ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्थल पर सामूहिक तौर पर मनाते हैं। यह आयुन हा कम्यून और जिया लाई प्रांत में मनाया जाता है। *

बरशा बंदोना, बांग्लादेश

हमारे पड़ोसी देश बांग्लादेश में आषाढ़ महीने के पहले दिन मनाए जाने वाले इस उत्सव बरशा बंदोना में संगीत, कविता पाठ और साल की पहली बारिश में स्नान करने की अनूठी परंपरा है। इस उत्सव में ग्रामीण महिलाएं आसमानी नीले रंग की साड़ियां पहनकर बादलों का स्वागत करती हैं। वर्षा का आह्वान करती हैं। *

हरियाली तीज पर झूला झूलती महिलाएं

प्रकृति से जुड़ाव का पर्व साओ जोआओ

भारत में मनाए जाने वाले वर्षा उत्सव

अपने देश भारत के अलग-अलग भागों में भी बारिश के आगमन पर, इसके स्वागत के लिए कई पारंपरिक उत्सव मनाए जाते हैं।

हरियाली तीज: राजस्थान समेत उत्तर भारत के कई राज्यों के ग्रामीण और आंचलिक क्षेत्रों में वर्षा ऋतु के आगमन पर प्रकृति की हरियाली और बादलों का स्वागत करने के लिए हरियाली तीज पर्व मनाते हैं। इस पर्व से धार्मिक आस्था भी जुड़ी हुई है। महिलाएं भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करती हैं और व्रत रखती हैं। इसके अलावा आपसी समुदाय और आस-पड़ोस की महिलाएं किसी बाग-बगीचे में सामूहिक तौर पर झूला झूलती हैं और पारंपरिक लोकगीत गाती हैं।

साओ जोआओ: मानसून की शुरुआत में गोवा में मनाया जाने वाला अनोखा त्योहार है, साओ जोआओ। इस पर्व में युवा मानसूनी बारिश के पानी से भरे कुओं और तालाबों में कूदकर प्रकृति के इस उपहार का जश्न मनाते हैं। इस उत्सव पर लोग सिर पर फलों के मुकुट भी पहनते हैं। इस तरह यह पर्व प्रकृति से हमारे जुड़ाव और उस पर निर्भरता को प्रकट करता है।

सापुतारा मानसून महोत्सव: गुजरात राज्य में मनाया जाने वाला सापुतारा मानसून महोत्सव, भारत के चुनिंदा उत्सवों में से है जो विशेष रूप से आसमान में तैरते बादलों, धुंध और बारिश के मनोरम मौसम को समर्पित है। इस पर्व से भी स्थानीय लोक संस्कृति की कई परंपराएं जुड़ी हुई हैं।

मकाहिकी उत्सव, अमेरिका

अमेरिका के हवाई द्वीप में मनाया जाने वाला मकाहिकी उत्सव वर्षा ऋतु, उर्वरता और शांति के देवता 'लोनो' को समर्पित है। चार महीनों तक चलने वाले इस पारंपरिक लोक उत्सव में कृषि कार्यों को रोककर दावतें, संगीत और पारंपरिक नृत्य किए जाते हैं। भरपूर वर्षा और उससे उपजी फसल के लिए देवता को धन्यवाद दिया जाता है। इस उत्सव के दौरान किसी भी तरह का विवाद, झगड़ा करना वर्जित होता है। सभी मिलकर प्रेम और सौहार्द के साथ सामूहिक तौर पर पहली बारिश का जश्न मनाते हैं। *

लोंगटैटो महोत्सव, चीन

चीन में मनाए जाने वाले पारंपरिक त्योहार लोंगटैटो में लोग बारिश के देवता माने जाने वाले 'ड्रैगन' के प्रति अपनी आदरांजलि अर्पित करते हैं, ताकि वे प्रसन्न रहें और उनकी कृपा से पूरे वर्ष कृषि के लिए अच्छी वर्षा होती रहे। 'लोंगटैटो' का शाब्दिक अर्थ 'अजगर (ड्रैगन) का अपना सिर उठाना' होता है। प्राचीन काल में चीन के निवासियों का मानना था कि इस दिन के बाद बारिश बढ़ जाती है, क्योंकि बारिश लाने वाला ड्रैगन राजा अपनी सर्दियों की नींद से जाग जाता है। इस त्योहार की सबसे प्रसिद्ध परंपरा इस दिन बाल कटवाना है। चीनी लोगों का मानना है कि इस दिन नाई के पास जाने या बाल कटवाने से दुर्भाग्य दूर होता है और पूरे साल अच्छी किस्मत बनी रहती है। इस दिन लोग 'ड्रैगन' नाम से जुड़े या ड्रैगन के अंगों का प्रतीक माने जाने वाले व्यंजन खाते हैं, जैसे- ड्रैगन की मूंछों वाले नूडल्स (लॉन्गक्सू नूडल्स) और पकौड़ी, ताकि अच्छी फसल और मौसम के लिए अपने भोजन के जरिए भी प्रार्थना की जा सके। *

लक्ष्य निर्धारण से मिलेगी करियर में निश्चित सफलता

बदलते दौर में किसी करियर में सफल होने के लिए केवल मेहनत नहीं, बल्कि निश्चित लक्ष्य और सही दिशा का होना भी जरूरी है। स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को अवसर पहचानने, बेहतर निर्णय लेने और निरंतर सीखते रहने की प्रेरणा देते हैं। अपना लक्ष्य कैसे निर्धारित करें, किस तरह उसे प्राप्त करें, बहुत उपयोगी सलाह।

सेल्फ इंप्रूवमेंट
नरेंद्र कुमार

मशहूर करियर काउंसलर रिचर्ड एन. बोलस ने अपनी किताब 'व्हाट कलर इज योर पैराशूट' में लिखा है, 'करियर में ऊंची उड़ान भरनी है तो पहले अपनी मंजिल तय करें।' तकनीक, एआई, ऑटोमेशन और बदलते रोजगार बाजार ने करियर की दुनिया को पूरी तरह से बदल दिया है। आज सफलता केवल कड़ी मेहनत से नहीं मिलती बल्कि उस सही दिशा से मिलती है, जिसे लक्ष्य निर्धारण या गोल सेटिंग कहा जाता है।

लक्ष्य देता है स्पष्ट दिशा: मानव मस्तिष्क तब सबसे प्रभावी ढंग से काम करता है, जब उसे स्पष्ट उद्देश्य हासिल होता है। मनोविज्ञान बताता है कि लक्ष्य हमारे ध्यान, ऊर्जा और निर्णयों को एक दिशा में केंद्रित करते हैं। बिना लक्ष्य के व्यक्ति अनेक काम करता है, लेकिन उसकी ऊर्जा बिखर जाती है। जबकि स्पष्ट लक्ष्य उसे बताते हैं कि कौन-सा काम महत्वपूर्ण है और कौन-सा बिना किए भी चल जाएगा। यही कारण है कि उद्यमी, वैज्ञानिक, खिलाड़ी और प्रशासक अपने बड़े उद्देश्यों को छोटे-छोटे लक्ष्यों में बांटकर काम करते हैं।

गोल सेटिंग से बढ़ती उत्पादकता: स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को समय का महत्व समझाता है। जब किसी व्यक्ति के पास निर्धारित लक्ष्य होता है, तो वह लगातार सीखने के लिए प्रेरित होता है। मसलन यदि किसी का उद्देश्य साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ बनना है तो नेटवर्किंग, क्लाउड सिक्योरिटी, एथिकल हैकिंग और एआई आधारित सुरक्षा प्रणालियों का लगातार अध्ययन करता है। वास्तव में यही सीखने की प्रवृत्ति भविष्य में उसकी बड़ी ताकत बनती है।

निर्णय लेना सीखिए: करियर में हर दिन छोटे-बड़े निर्णय लेने होते हैं- नई नौकरी स्वीकारें या नहीं, कौन-सा कोर्स करें, किस तकनीक को सीखें, किस अवसर को छोड़ दें? ये ऐसी बातें हैं जो हर उस व्यक्ति के सामने आती ही आती हैं, जो अभी अपने करियर में आगे बढ़ने की दिशा में होता है। ऐसे में यदि आपका लक्ष्य स्पष्ट है तो निर्णय लेना सरल हो जाता है, क्योंकि हर विकल्प को उसी कसौटी पर परखा जाता है कि वह हमें हमारे उद्देश्य के कितना निकट ले जाएगा।

छोटे-छोटे लक्ष्य प्राप्त करें: जब व्यक्ति छोटे लक्ष्य पूरा करता है तो उसका अपनी क्षमता पर भरोसा बढ़ने लगता है। वास्तव में यही आत्मविश्वास उसे बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रेरित करता है और यही आत्मविश्वास बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए उसका आधार बनता है। करियर की लंबी यात्रा में यह मानसिक ताकत बेहद जरूरी होती है।

बदलें अपनी रणनीति: जिन लोगों के पास कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं होता, वे एक समय के बाद ठहर जाते हैं। कोई परियोजना अपेक्षित परिणाम नहीं देती है। ऐसे में वे बार-बार असफल होने लगते हैं। लेकिन जिनके पास अपने लक्ष्य की स्पष्ट दिशा होती है, वे इन बातों से परेशान नहीं होते। वे अपनी रणनीति बदलते हैं, सीखते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं।

मजबूत नेटवर्क बनाएं: जब व्यक्ति के करियर का अपना लक्ष्य तय होता है, तो वह अपने तय लक्ष्य के वरिष्ठों और विशेषज्ञों के साथ नेटवर्किंग मजबूत करता है, क्योंकि उसे पता होता है कि आज नहीं तो कल उसे इन्हीं के साथ काम करना है। यह नेटवर्क इसके लिए बहुत काम का साबित होता है। *

ऐसे डिसाइड करें टार्गेट

कुछ करियर काउंसलर लक्ष्य तय करने के मामले में एक स्मार्ट मॉडल अपनाने की सलाह देते हैं। उनके अनुसार ऐसे लक्ष्य बनाएं, जो बिल्कुल स्पष्ट हों, जिसे हासिल किया जा सके, यानी जो आपकी क्षमताओं के अनुकूल हों। लक्ष्य ऐसा हो, जो वर्तमान समय में प्रासंगिक करियर हो, जिस तक एक समयबद्ध रफ्तार से पहुंचा जा सके।

नेचुरल प्लेस / बाल मुकुंद ओझा

स्टेपिंग स्टोंस खूबसूरत रिवर क्रॉसिंग

लंदन, दुनिया के अग्रणी पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां अगर तापमान 22 डिग्री सेल्सियस हो तो यह अच्छे मौसम का परिचायक माना जाता है। लंदन प्रवास के दौरान एक दिन ऐसे ही अनुकूल मौसम का फायदा उठाते हुए हमने सपरिवार घूमने का प्रोग्राम बनाया और पहुंच गए बॉक्स हिल की तलहटी पर बहने वाली मोल नदी पर बने मशहूर स्टेपिंग स्टोंस पर।

खूबसूरत वॉकिंग प्लेस: मोल नदी, दक्षिणी इंग्लैंड में टेम्स नदी की एक सहायक नदी है। यह गैटविक एयरपोर्ट के पास वेस्ट ससेक्स में निकलती है और सरे शहर से उत्तर-पश्चिम में 80 किमी. बहकर हैंपटन कोर्ट पैलेस में टेम्स नदी तक पहुंचती है। यह नदी सरे जिले के मोल वैली को अपना नाम देती है। यह खूबसूरत वॉकिंग प्लेस, साउथ लंदन स्थित हमारे घर से लगभग 50 किमी. दूर ही है। स्टेपिंग स्टोंस, सरे काउंटी स्टेट के इस हिस्से में एक मशहूर जगह है और नदी को बहते हुए बिल्कुल करीब से देखने के लिए यह एक परफेक्ट जगह है।

इसे पार करना है रोमांचक: स्टेपिंग स्टोंस, पत्थरों का एक सेट है, जिसे एक काम चलाऊ रास्ता बनाने के लिए लगाया गया है। यह पैदल चलने वालों को एक प्राकृतिक नदी के रास्ते से होकर ले जाता है। ये स्टोन यानी पत्थर विक्टोरियन जमाने से बॉक्स हिल आने वाले पर्यटकों का पसंदीदा स्थल रहे हैं। बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक, पत्थर से पत्थर पर कदम रखते हैं और बिना फिसले संतुलन बनाए रखने की कोशिश करते हैं। ये बैलेंस ब्लॉक, शारीरिक गतिविधि और सक्रिय प्रयास को बढ़ावा देते हैं। विशेषकर बच्चे, किशोर और युवाओं को ये स्टेपिंग स्टोंस, पूरे शरीर के व्यायाम के लिए कूदने, खिंचाव, चढ़ाई और संतुलन बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। मैंने भी नदी को इन लगभग 15 स्टेपिंग स्टोंस पर चलकर पार किया। कई बार बैलेंस बिगड़ा मगर तुरंत संभल भी गया। एक बारगी तो ऐसे लगा जैसे इस बार तो गिर ही जाऊंगा, मगर इन स्टेपिंग स्टोंस को आखिर पार कर ही लिया।

दूसरी तरफ हैं शानदार नजारे: एक बार स्टेपिंग स्टोन पार करने के बाद, रास्ता नदी के साथ-साथ चलता है, जहां से पानी और आस-पास की मंत्र मुग्ध कर देने वाली हरियाली के खूबसूरत नजारे दिखते हैं। बॉक्स हिल स्टेपिंग स्टोंस वॉक, सरे हिल्स नेशनल लैंडस्केप में 3.2 किमी. का हाइकिंग रूट है। लगभग 1 घंटे में 477 फीट की चढ़ाई चढ़ लेते हैं। वॉक का यह हिस्सा थोड़ा मुश्किल है, लेकिन बहुत रोमांचक है। *

बराक नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि ब्रह्मपुत्र के बाद उत्तर-पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि, संस्कृति और पारिस्थितिकी की दूसरी महत्वपूर्ण जीवन रेखा है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

पूर्वोत्तर भारत की दूसरी जीवन रेखा बराक नदी

विशिष्ट नदी
वीना गौतम

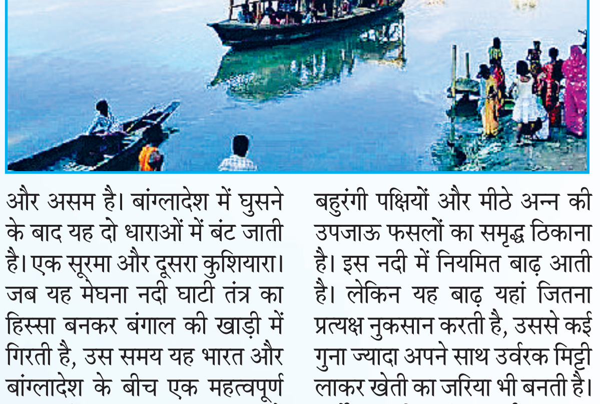

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदी किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं व संस्कृतियां फली-फूली हैं। पूर्वोत्तर भारत की नदियों की बात करें, तो ब्रह्मपुत्र के बाद बराक नदी, दूसरी महत्वपूर्ण नदी है। बराक नदी के बारे में कहा जाता है कि यह केवल एक जलधारा नहीं है बल्कि एक जीवंत सभ्यता, संस्कृति और पारिस्थितिकी का आधार है।

उद्गम और अपवाह तंत्र: बराक नदी मणिपुर से निकलती है और असम की बराक घाटी से होकर बहती है। बराक घाटी से आगे बढ़कर यह बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है और वहां यह मेघना नदी घाटी तंत्र का हिस्सा बन जाती है। मणिपुर में जहां बराक नदी का जन्म होता है, वहां यह छोटी-छोटी धाराओं के रूप में आगे बढ़ती है और फिर आगे चलकर एक विशाल नदी का रूप ले लेती है। इसकी कुल लंबाई 900 किलोमीटर है और इसका प्रवाह क्षेत्र मणिपुर, मिजोरम और असम है। बांग्लादेश में घुसने के बाद यह दो धाराओं में बंट जाती है। एक सूरमा और दूसरा कुशियारा। जब यह मेघना नदी घाटी तंत्र का हिस्सा बनकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है, उस समय यह भारत और बांग्लादेश के बीच एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय जलधारा का रूप ले लेती है।

पारिस्थितिकीय महत्व: बराक नदी का बेसिन जैव-विविधता का समृद्ध केंद्र है। घने वनों, वेटलैंड और मैदानों से भरपूर इलाकों से गुजरती बराक नदी, दर्जनों किस्म की मछलियों, सैकड़ों किस्म के बहुरंगी पक्षियों और मीठे अन्न की उपजाऊ फसलों का समृद्ध ठिकाना है। इस नदी में नियमित बाढ़ आती है। लेकिन यह बाढ़ यहां जितना प्रत्यक्ष नुकसान करती है, उससे कई गुना ज्यादा अपने साथ उर्वरक मिट्टी लाकर खेती का जरिया भी बनती है।

पूर्वोत्तर की कृषि-अर्थव्यवस्था में योगदान: पूर्वोत्तर के कृषि जीवन में इस नदी का योगदान ब्रह्मपुत्र नदी से भी ज्यादा है। असम के लाखों लोगों के जीवन जीने का यह मुख्य आधार है। धान, जूट और सब्जियों की खेती, इस नदी के उर्वरक मिट्टी की देन है। बाढ़ के कारण यह हर साल जो उपजाऊ मिट्टी लेकर आती है, वह एक तरह से उत्तर पूर्व का खाद्यान्न भंडार भरती है। असल में यह नदी जल परिवहन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। बराक नदी केवल जल का नहीं बल्कि कृषि, रोजगार और आर्थिक स्थिरता का भी स्रोत है।

ऐतिहासिक-सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व: बराक नदी के किनारे बसे गांवों में त्योहारों पर अकसर मेलों का आयोजन होता है, जो जल और प्रकृति दोनों के प्रति आस्था और श्रद्धा का आधार हैं। बराक नदी के किनारे बंगाली और दूसरे समुदायों का निवास है, जिनकी सांस्कृतिक पहचान में इस नदी का महत्वपूर्ण योगदान है। इतिहास में बराक नदी ने उत्तर-पूर्व को अन्य क्षेत्रों से जोड़ने का महत्वपूर्ण काम किया था। प्राचीन और मध्यकाल में यह व्यापारिक मार्ग रही है। सिलचर जैसा सांस्कृतिक शहर इसी नदी के किनारे विकसित हुआ है।

संरक्षण है जरूरी: उत्तर-पूर्व की यह दूसरी सबसे महत्वपूर्ण नदी कई तरह की समस्याओं, जैसे- प्रदूषण, अवैध रेत खनन, जलवायु परिवर्तन आदि का सामना कर रही है। यदि इसका संरक्षण न हुआ तो पूर्वोत्तर भारत की यह दूसरी जीवनरेखा संकट में पड़ सकती है। *

मर्लिन मुनरो से इंस्पायर रहीं बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेस

हॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेस में शामिल रहीं मर्लिन मुनरो ने दुनिया भर के दर्शकों को ही नहीं, हिंदी सिनेमा की कई फेमस एक्ट्रेसेस को भी इंस्पायर किया। मर्लिन मुनरो की जन्मशती केवल एक एक्ट्रेस को याद करने का अवसर नहीं, बल्कि उस खूबसूरती, ग्लैमर और व्यक्तित्व के प्रभाव को समझने का भी समय है।

ग्लैमर आइकन
डी. जे. नंदन

साल 2026, 20वीं सदी की सबसे मशहूर हॉलीवुड एक्ट्रेस में से एक मर्लिन मुनरो का जन्मशती वर्ष है। मर्लिन मुनरो की जन्मशती केवल हॉलीवुड के लिए खास नहीं है, बॉलीवुड के लिए भी यह विशेष है। क्योंकि बॉलीवुड में भी मर्लिन मुनरो के ग्लैमर ने न केवल अपनी स्थाई छाप छोड़ी है बल्कि आज भी बॉलीवुड के ग्लैमर में मर्लिन मुनरो की साफ-साफ मौजूदगी देखी जा सकती है। हालांकि मर्लिन ने कभी-भी बॉलीवुड की कोई फिल्म नहीं की, लेकिन उनकी छवि, उनका ग्लैमर, उनका फैशन सेंस और कैमरे के सामने उनकी सहज आत्मविश्वास से भरी मौजूदगी ने बॉलीवुड की कई पीढ़ियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित किया है।

मधुबाला

जीनत अमान

बॉलीवुड पर प्रभाव: वास्तव में 1950 और 1960 के दशक का भारतीय सिनेमा, परिवर्तन के दौर का सिनेमा था। पहले जहां नायिकाएं सादगी और पारंपरिक पहनावों तक सीमित रहती थीं, वहीं धीरे-धीरे आधुनिक परिधान, पश्चिमी फैशन और कहीं ज्यादा आत्मविश्वासी नायिका पर्दे पर दिखाई देने लगीं, जिसमें मर्लिन मुनरो के ग्लैमर का साफ-साफ असर देखा जा सकता है। भारतीय फिल्मों की नायिकाओं ने मर्लिन मुनरो से बहुत कुछ सीखा है और बहुत कुछ उनकी तरह बनने और ढलने की भी कोशिश की है। मर्लिन मुनरो की मुस्कान, कैमरे के सामने संवाद अदा करने का उनका अंदाज, बॉडी लैंग्वेज और फैशन ने भारतीय फिल्मकारों को यह एहसास कराया कि ग्लैमर भी अभिनय की भाषा का हिस्सा हो सकता है।

मर्लिन मुनरो से मधुबाला की तुलना: बॉलीवुड की जिस नायिका पर सबसे पहला और सबसे ज्यादा मर्लिन मुनरो का असर दिखा, वह मधुबाला थीं। उस दौर में अकसर मधुबाला की तुलना मर्लिन मुनरो से की जाती थी। दोनों ही असाधारण सुंदर थीं, दोनों के पास सहज मुस्कान का जबर्दस्त जादू था और दोनों ही कम उम्र में असमय मृत्यु को प्राप्त हुईं। हिंदी सिनेमा के दर्शक मधुबाला को मर्लिन मुनरो की तरह देखते थे। हालांकि दोनों की अभिनय शैली और फिल्मी यात्रा एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। फिर भी यह सच है कि दोनों अपने-अपने देशों में सौंदर्य और आकर्षण का स्थाई प्रतीक बन गईं। मधुबाला की लोकप्रियता भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में विकसित हुई, जबकि मर्लिन वैश्विक पॉप कल्चर की पहचान बनीं।

दीपिका पादुकोण

करीना कपूर

परवीन बॉबी-जीनत अमान पर प्रभाव: परवीन बॉबी की भी तुलना कई संदर्भों में मर्लिन मुनरो से की जाती है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि अगर पश्चिमी ग्लैमर की सबसे साफ झलक बॉलीवुड की किसी अभिनेत्री में आजतक सबसे ज्यादा दिखी है, तो वह परवीन बॉबी ही थीं। 1970 और 1980 के दशक में उन्होंने भारतीय फिल्मों में आधुनिक, आत्मनिर्भर और फैशनेबल महिला की नई छवि प्रस्तुत की थी। पश्चिमी परिधान, खुले विचार और कैमरे के सामने सहज आत्मविश्वास ने उन्हें उस दौर की सबसे अलग अभिनेत्री बना दिया था। ऐसे ही जीनत अमान ने एक दौर में न सिर्फ बॉलीवुड अभिनेत्रियों की पारंपरिक परिभाषा को बदला था बल्कि वह भी पश्चिमी फैशन, मर्लिन मुनरो की तरह बड़े-बड़े धूप के चश्मे, स्टाइलिश गाउन पहनने और आत्मविश्वास से बॉलीवुड की सिने स्क्रीन को अपनी मौजूदगी से चौंधिया दिया था। हालांकि जीनत अमान या परवीन बॉबी के बारे में यह नहीं कह सकते कि वे सीधे-सीधे मर्लिन मुनरो को कॉपी करती थीं। इन दोनों ग्लैमरस एक्ट्रेसेस ने मुनरो से प्रेरणा तो ली थी, लेकिन उन्होंने अपना ग्लैमर भारतीय संदर्भों में विकसित किया था।

इन एक्ट्रेसेस पर भी दिखा असर: 1980-90 के दशक में श्रीदेवी ने ग्लैमर और अभिनय का वैसा ही संतुलन पेश किया था, जैसा कभी मर्लिन मुनरो ने हॉलीवुड में किया था। श्रीदेवी के अभिनय में उनका गजब का आकर्षण शामिल होकर उन्हें अद्वितीय बनाता था। बाद की पीढ़ियों में करीना कपूर, प्रियंका चोपड़ा और दीपिका पादुकोण भी अपने ग्लैमर के प्रदर्शन में मर्लिन मुनरो से प्रेरित दिखाई पड़ी हैं। *

ड्रेसिंग स्टाइल-फोटो शूट पर भी दिखा असर

बॉलीवुड में मर्लिन मुनरो का सबसे ज्यादा और गहरा प्रभाव किसी चीज पर पड़ा है, तो वह है कॉस्ट्यूम डिजाइन। यह अकारण नहीं है कि बॉलीवुड की हीरोइनों के बीच सफेद और आइवरी कलर के गाउन सबसे ज्यादा आकर्षण बिखेरते रहे हैं, जो कि मर्लिन मुनरो के सबसे ज्यादा पसंदीदा थे। मर्लिन मुनरो की तरह ही बॉलीवुड की अभिनेत्रियों ने हॉफ शोल्डर और हॉल्टर नेक ड्रेस को अपनी पहचान से बार-बार जोड़ा है। उन्हीं की तरह प्लेटिनम या हल्के सुनहरे बालों का प्रयोग, लाल लिपस्टिक, क्लासिक मेकअप तथा कैमरे की ओर हल्की मुस्कान के साथ पोज देने की शैली, ये सब कुछ बॉलीवुड की अभिनेत्रियों ने मर्लिन मुनरो से ही सीखा। ड्रेसिंग स्टाइल के अलावा फिल्म पत्रिकाओं में अनेक अभिनेत्रियों ने वैसे ही फोटो शूट कराए जैसे एक जमाने में मर्लिन मुनरो कराती थीं। घुमावदार रोशनी, क्लोज अप मुस्कान और क्लासिक हेयर स्टाइल, ये सभी प्रभाव बॉलीवुड में मर्लिन मुनरो से ही आए हैं। आज भी कई सेलिब्रिटी फोटो शूट पोज में ओल्ड हॉलीवुड थीम अपनाते हैं, जिसमें मर्लिन मुनरो की शैली सबसे खास होती है।